HARPER
TROPHY

$5.95 US
$7.95 CDN

ममीज़ – मिस्त्र में बनीं

अलीकी, हिंदी : विदूषक

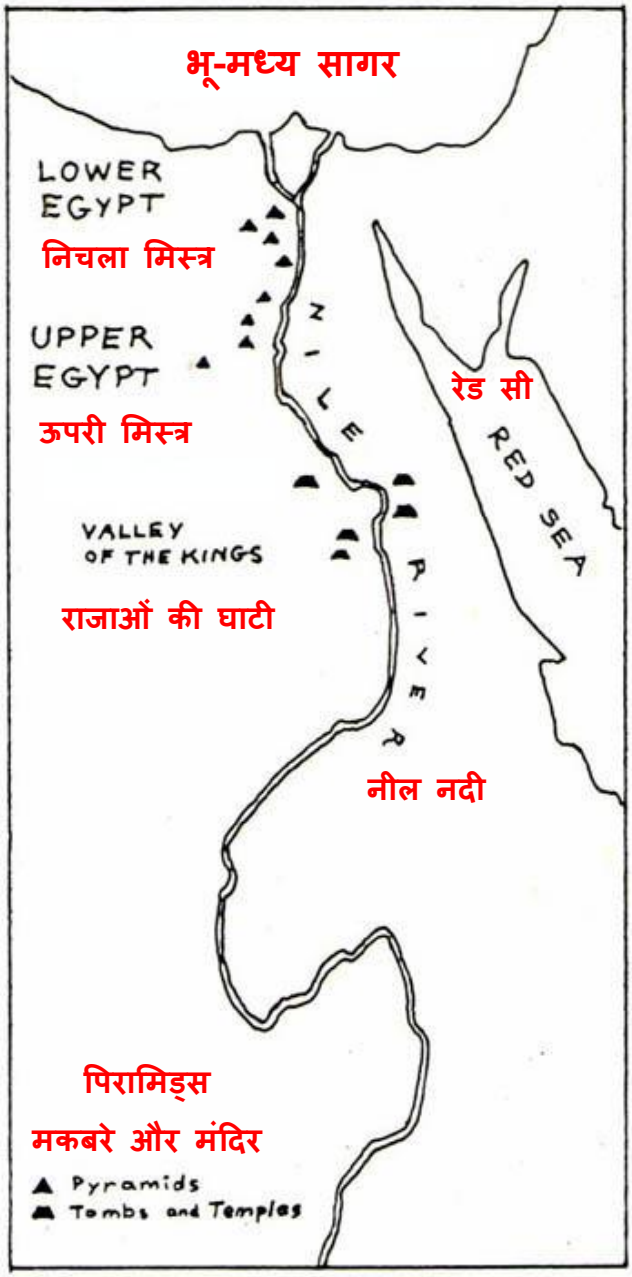

प्राचीन मिस्त्र एक लम्बा, सकरा देश था. वो बीच में नील नदी से बंटा था. नदी के दोनों ओर उपजाऊ ज़मीन थी जहाँ अनाज उगता था. उसके आगे की ज़मीन रेगिस्तान थी. वहां पर प्राचीन काल में मिस्त्रवासी, मृत लोगों को दफनाते थे.

मृत लोगों के कुछ देवी-देवता

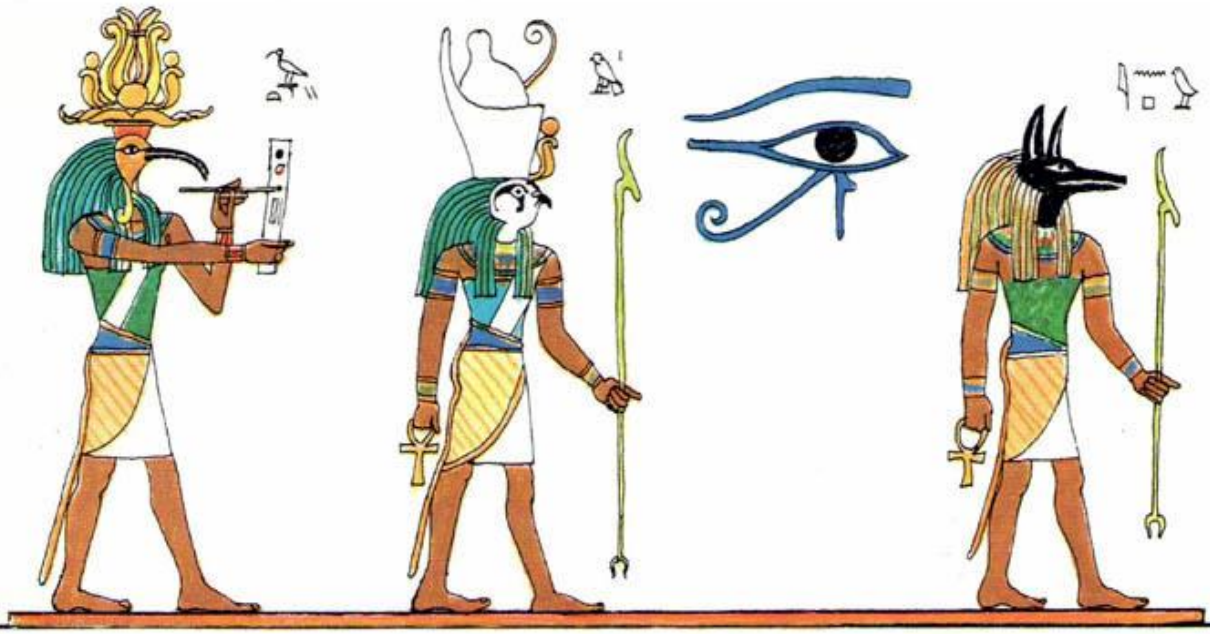

थोथ (पक्षी के सिर वाला देव – लेखकों का)

होरस (आसमान का देव – ओसिरिस का बेटा)

उदजात (होरस की जादुई आँख, मृतकों का रखवाला)

अनूबिस (सियार के सिर वाला देव)

गेब
(पृथ्वी की देवी)

हथोर
(शहर की देवी)

आइसिस (ओसिरिस की पत्नी, होरस की माँ)

नेफ्थ्य्स
(आइसिस की बहन)

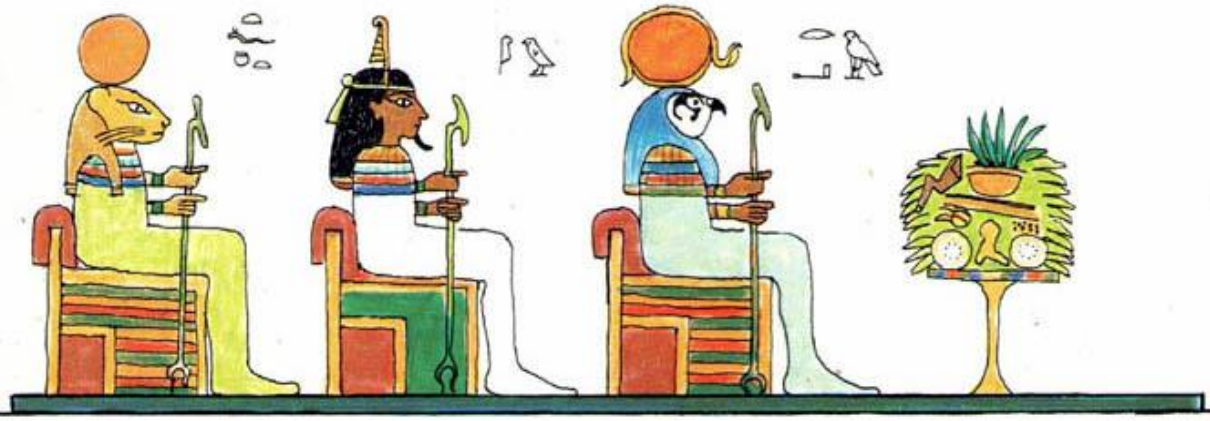

तेफनट
(नमी की देवी)

शू
(हवा का देव)

री-होराख्ती
(दोनों क्षितिजों का देव)

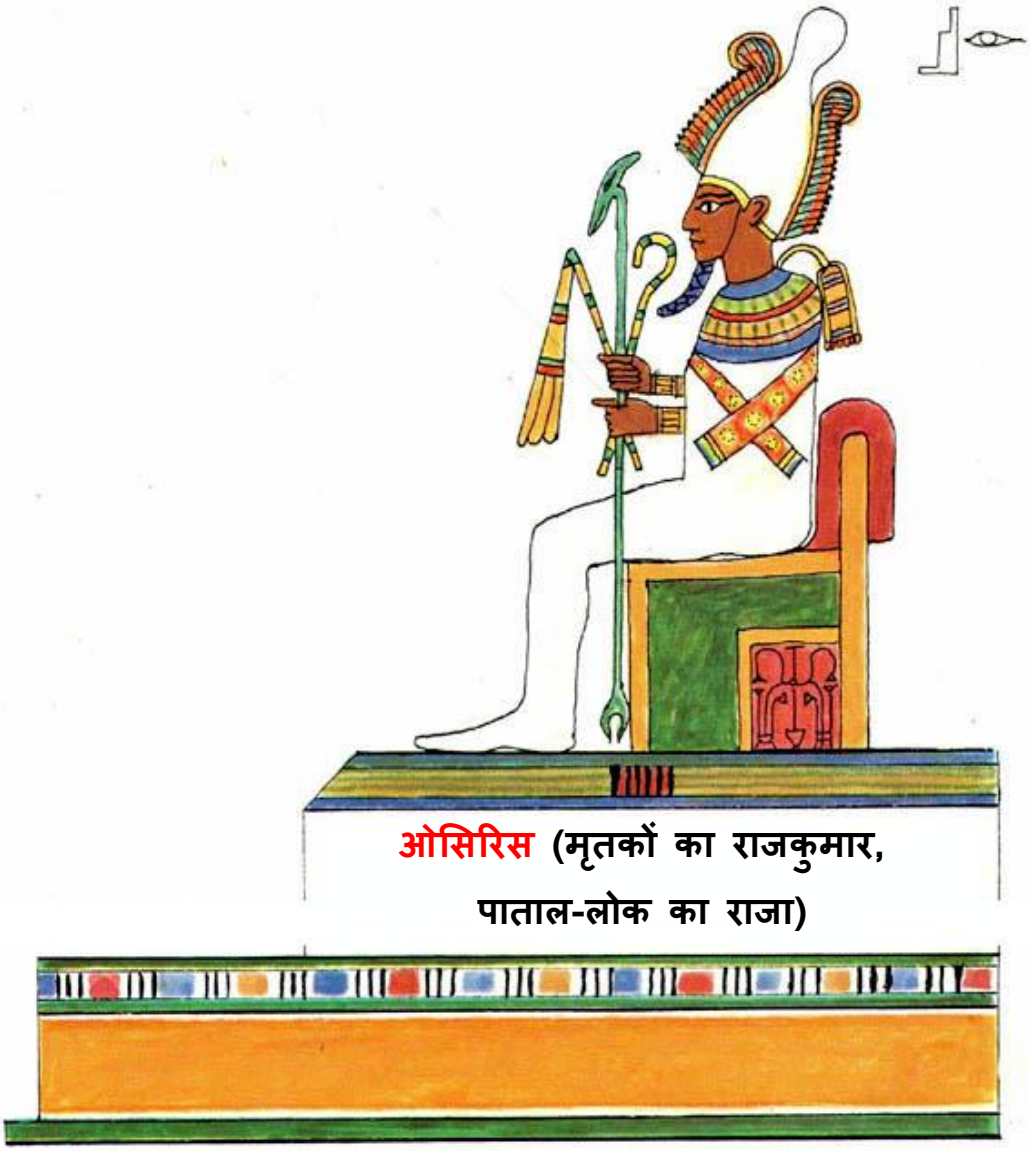

ओसिरिस (मृतकों का राजकुमार, पाताल-लोक का राजा)

प्राचीन मिस्त्र-वासियों में एक प्रबल इच्छा थी.

वो इच्छा थी – हमेशा ज़िन्दा रहने की, यानि अमरत्व की.

मिस्त्र-वासियों मानते थे कि मृत्यु के बाद उनका एक नया जीवन शुरू होगा.

और वो अपनी कब्रों और मकबरों में उसी तरह रहेंगे जैसे वो ज़मीन पर महलों में रहते थे.

वो एक नई दुनिया की यात्रा करेंगे और वहां मृतकों के देवी-देवताओं के साथ वास करेंगे.

मिस्त्र-वासियों का मानना था कि हरेक इंसान की "बा" यानि "आत्मा" होती है.

हरेक व्यक्ति का "का" यानि उसका अदृश्य जुड़वां भी होता है.

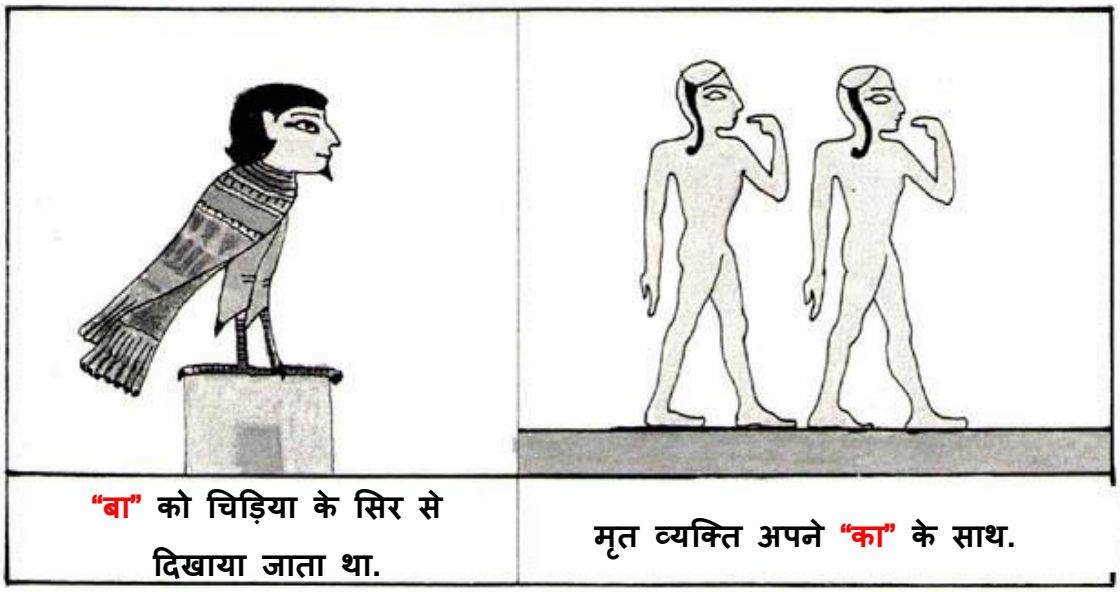

"बा" को चिड़िया के सिर से दिखाया जाता था.

मृत व्यक्ति अपने "का" के साथ.

उनका मानना था कि मरने के बाद व्यक्ति के "बा" और "का" उसके शरीर से मुक्त होकर कब्र या मकबरे में निवास करेंगे.

व्यक्ति का "बा" उसके जीवित परिवार और मित्रों के साथ सम्बन्ध बनाये रखेगा.

व्यक्ति का "का" उसके शरीर से पाताल-लोक आता-जाता रहेगा.

किसी व्यक्ति के हमेशा ज़िन्दा रहने के लिए, यह ज़रूरी था कि "बा" और "का" उसके शरीर को पहचानें, नहीं तो वो उसमें वापिस नहीं जा सकेंगे.

इस वजह से मृत व्यक्ति के शरीर को सुरक्षित या "ममीफाईड" करना ज़रूरी था.

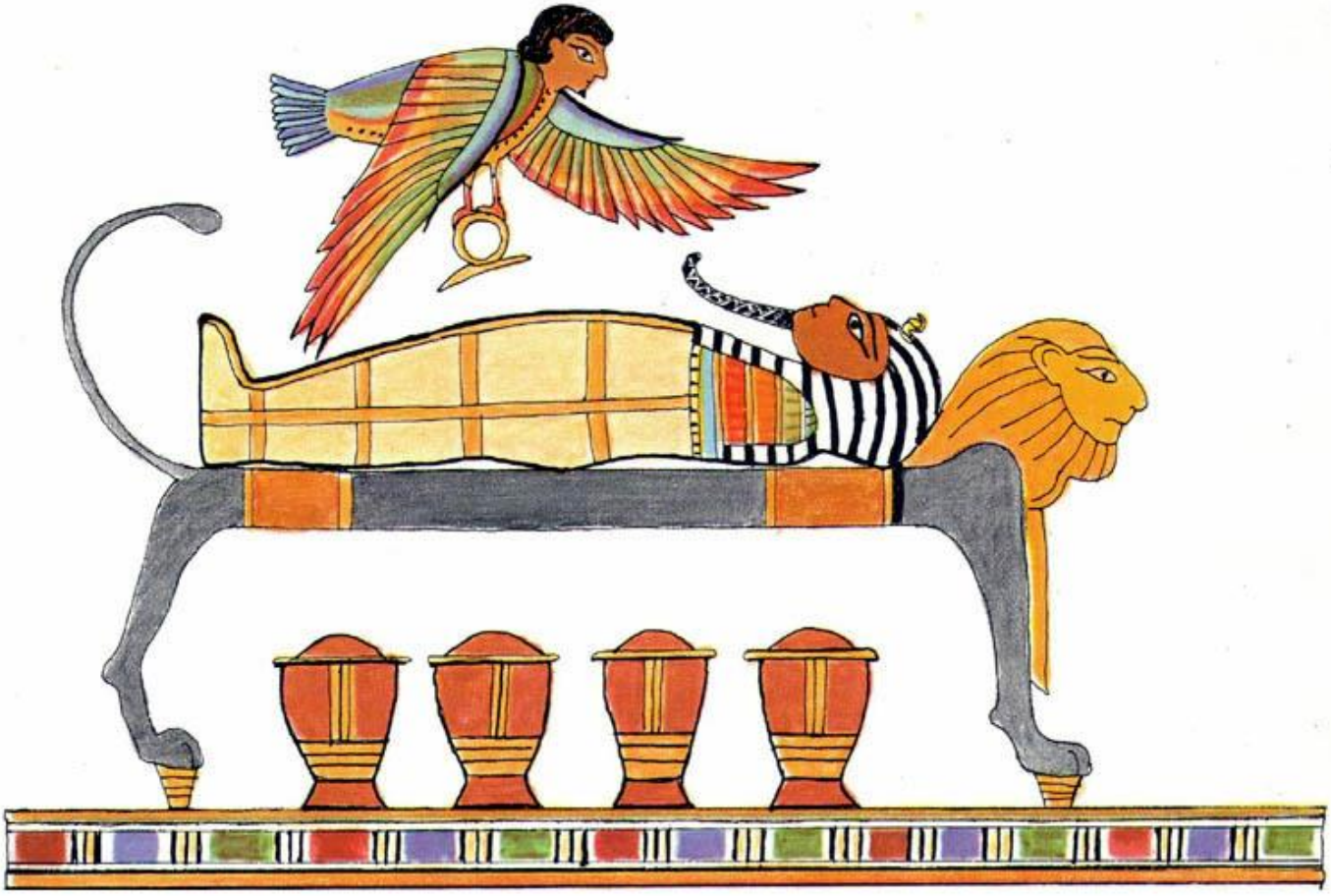

"बा" रात को "ममी" के पास वापिस आते हुए.

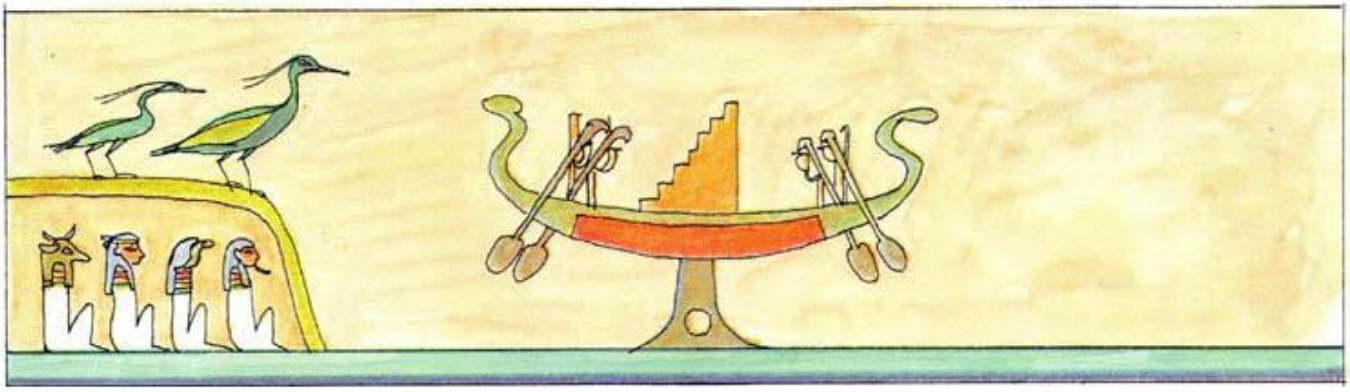

ऐसा मानना था कि मृत व्यक्ति, दूसरी दुनिया में "नाव" में बैठकर जाते थे.

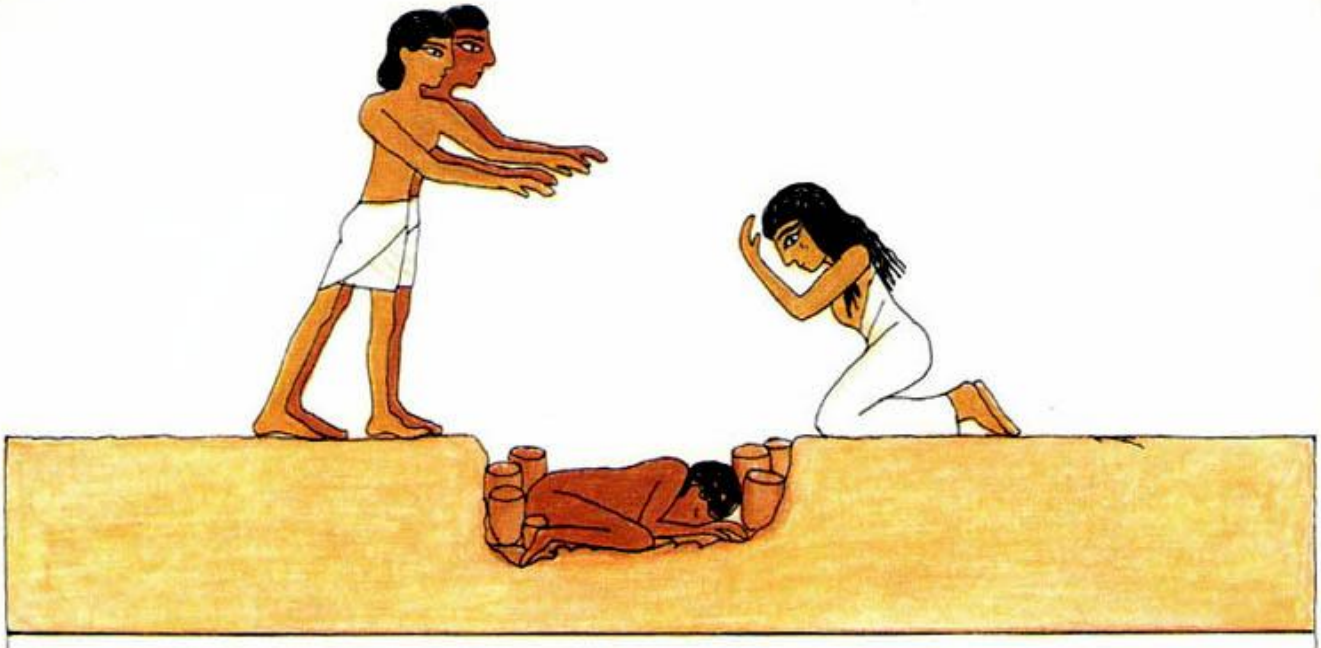

मृत व्यक्ति के शरीर को "झुकने" वाली स्थिति में दफनाया जाता था.
उसके नए जीवन के लिए, मटकों में भोजन रखा जाता था.

"ममी" एक सूखी लाश होती है जो बाद में सड़ती नहीं है.
सबसे प्राचीन मिस्त्र-वासी प्राकृतिक रूप से "ममीफाई" हो जाते थे.
उनकी लाश को ज़मीन में दफनाया जाता था.
मिस्त्र की तपती गर्म रेत, लाश को एकदम सुखा देती थी.
बाद में सुरक्षित लाश, पत्थर जैसी कठोर – एकदम "फॉसिल" यानि जीवाश्म जैसी बन जाती थी.

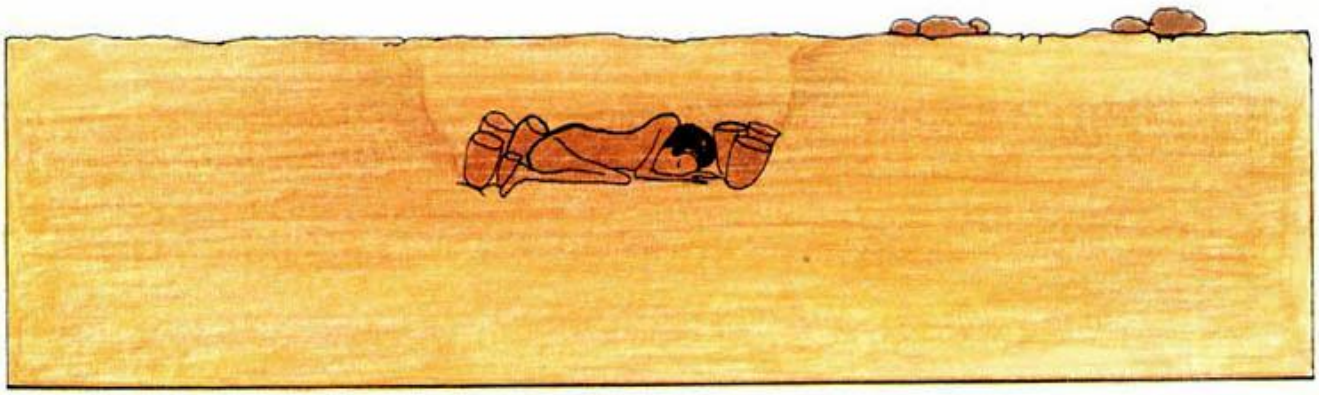

पर जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे दफ़नाने का काम और विस्तृत और जटिल होता गया.

मृत व्यक्ति की लाश को कपड़े या खाल के कफ़न में लपेटा जाने लगा.

लाश को विशेष गड्ढों में, और गुफाओं में, दफनाया जाने लगा. दफ़नाने से पहले कब्र में पत्थर या लकड़ी बिछाई जाती थीं.

जो लाशें रेत में नहीं दफनाई जाती थीं, वो नमी, हवा और बैक्टीरिया के संपर्क में आती थीं. और फिर वो लाशें जल्द ही सड़ जाती थीं.

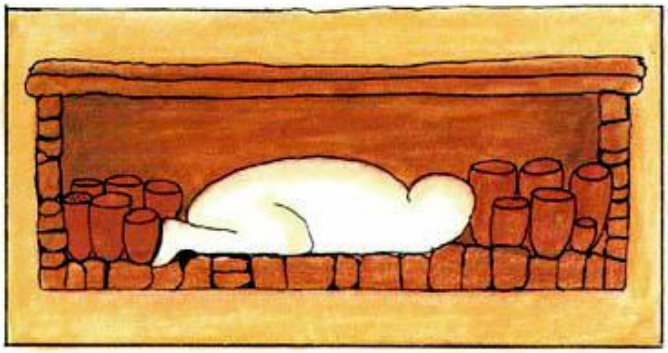

फिर लोगों ने अपने मृतकों को लीप-पोतकर उन्हें "ममीफ़ाय" करना सीखा.

सैकड़ों सालों के अभ्यास के बाद उन्होंने इस कला में माहरियत हासिल की.

लाश को "ममीफ़ाय" करने वाले कारीगर अपने काम में इतने कुशल हुए कि उनके द्वारा तैयार की गयी लाशें, हजारों सालों तक सुरक्षित रहीं.

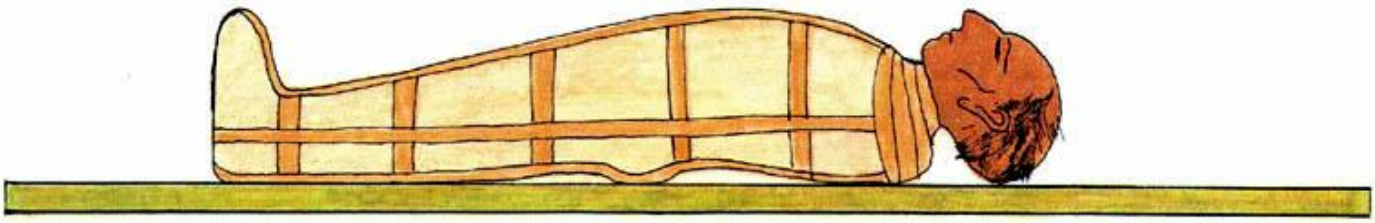

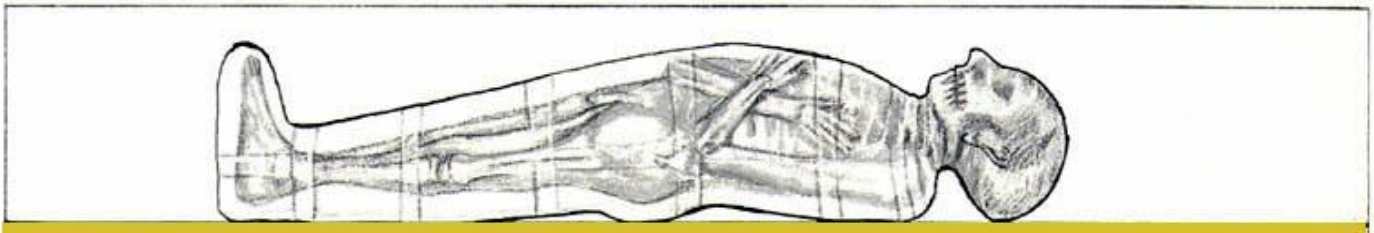

लाश को लपेटने से पहले उसे लिटाया जाता था. वर्तमान में वैज्ञानिक एक्स-रे मशीनों के ज़रिये "ममी" के कफ़न के अन्दर का अध्धयन करते हैं.

किसी भी लाश को "ममी" बनाने का काम बहुत लम्बा, जटिल और महंगा था.

लोगों को उनकी औकात – आर्थिक क्षमता के अनुसार "ममीफ़ाय" किया जाता था.

गरीब लोगों के दफ़नाने का काम एकदम सीधा-सादा होता था.

रईस और शाही लोग, जो राजा-रानी की सेवा करते थे, उनके दफ़नाने का काम बहुत विस्तृत होता था.

मिस्त्र के राजा – फेयरो – अपने देश में सबसे रईस और दौलतमंद थे.

लोगों का मानना था कि मृत्यु के बाद फेयरो, देवता बनते थे.

इसलिए फेयरो को "ममीफ़ाय" करने और दफ़नाने का काम बेहद विस्तृत होता था.

उन्हें शाही तरीके से दफनाया जाता था.

मिस्त्रवासी, जानवरों को भी "ममीफ़ाय" करते थे. जानवरों पर भी वो मृत लोगों जैसे ही लेप करते थे. बाद में वे जानवरों को किसी देवी-देवता की कुर्बानी में दफना देते थे.

बिल्ली की "ममी" के कफ़न पर उसका चेहरे पेंट किया गया है.

शिकरा (बाज़) की "ममी" अपने कफ़न के अन्दर.

मगरमच्छ की "ममी" के कफ़न के ऊपर उसकी आँखें सिली गयी हैं.

कारीगरों को एक लाश को "ममीफाए" करने में सत्तर दिन का समय लगता था.

अमीरों के या शाही दफ़न के लिए कारीगर, कब्र के पास ही अपनी वर्कशॉप बनाकर वहीं काम करते थे. लाश तैयार होने के बाद वो उसे कब्र में दफनाते थे.

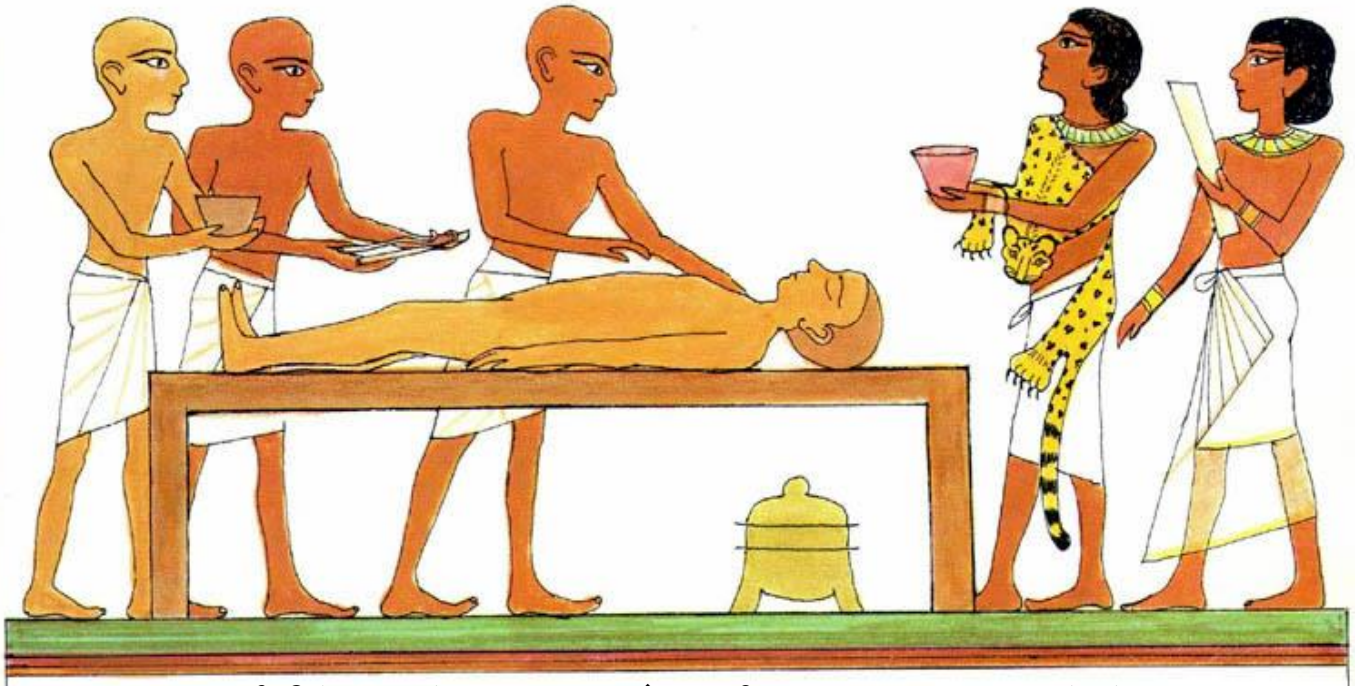

"ममीफीकेशन" के हर चरण में पुजारी, पूजा-अनुष्ठान करते थे.

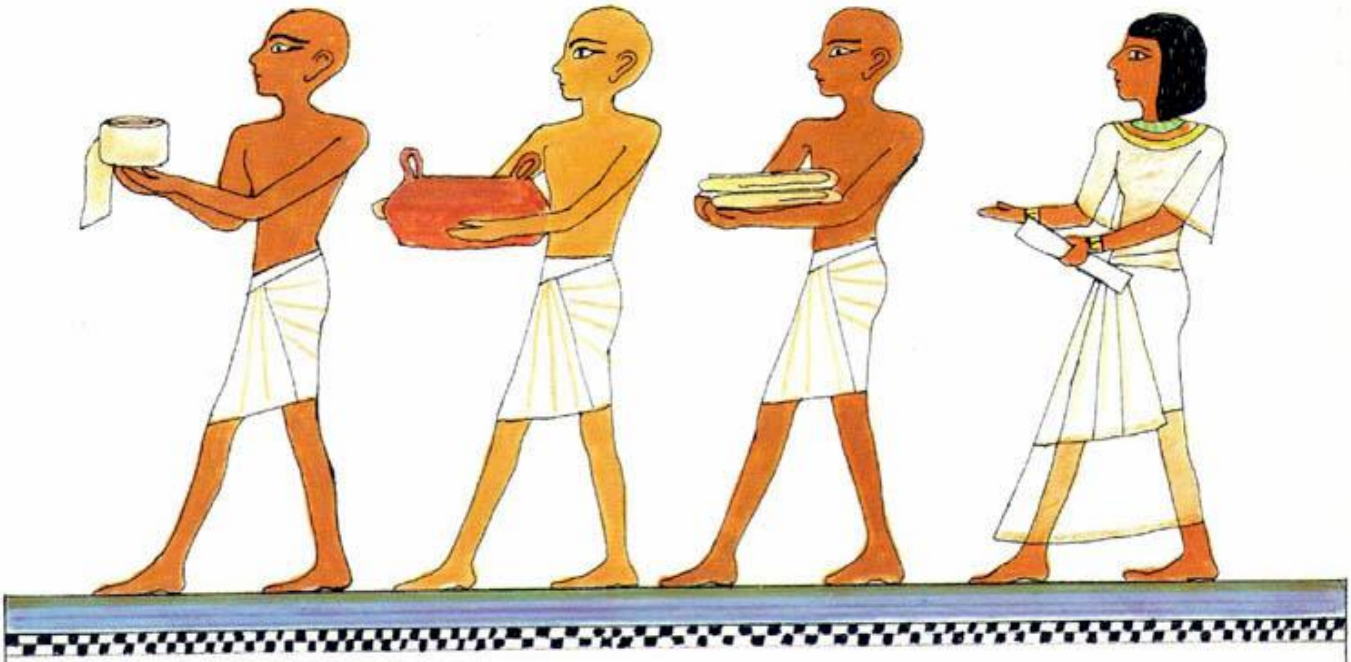

कारीगरों के सहायक उनके लिए सामन लाने का काम करते थे.

लाश को "ममी" बनाने के लिए कारीगर सबसे पहले शरीर के अन्दर के सब अंगों को बाहर निकालते थे.

वो धातु के "हुक" के ज़रिये नाक से मस्तिष्क के टुकड़ों को बाहर निकालते थे.

फिर वे शरीर में बायीं ओर एक छेद करके उसमें से जिगर, फेफड़े, पेट और आंतें बाहर निकालते थे.

शरीर के हर अंग को बाहर निकालने के बाद उसपर एक रासायन "नैटरोन" का लेप किया जाता था, और फिर उसे अपने विशेष डिब्बे – "कानोपिक जार" में रखा जाता था.

सिर्फ हृदय ही शरीर से बाहर नहीं निकाला जाता था.

बाद मे हृदय को भी बाहर निकाला जाने लगा और उसके स्थान पर पत्थर का बना पवित्र गुबरैला (कीड़ा) अन्दर रखा जाने लगा.

फिर कपड़े के छोटे-छोटे बंडलों को "नैटरोन" के लेप में लपेटकर शरीर के अन्दर भरा जाता था.

शरीर पर बाहर से भी "नैटरोन" का लेप किया जाता था.

यह रासायन, लाश का उसी तरह पानी सोखता था, जैसे रेगिस्तान की गर्म रेत करती थी.

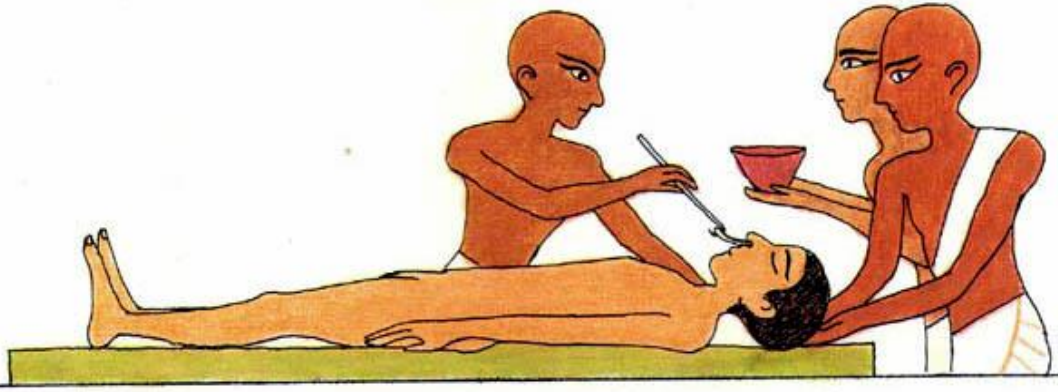

लाश का भेजा (मस्तिष्क) निकालकर फेंक दिया जाता था.

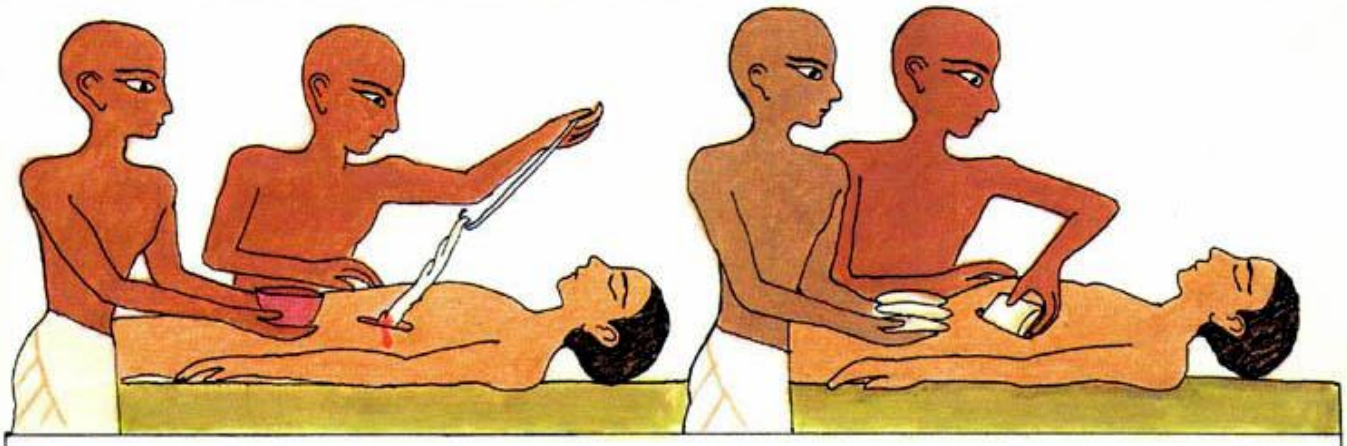

फिर अन्दर के अंग बाहर निकाले जाते थे. शरीर के खोल को "नैटरोन" के बंडलों से भरा जाता था.

लाश को लेप करने के लिए उसे एक विशेष तिरछे "पलंग" पर लिटाया जाता था.
इस पलंग में नीचे एक छेद होता था.
पलंग पर "नैटरोन" रासायन बिछा होता था.
यह रासायन, नील नदी में पाया जाता था.
जैसे-जैसे शरीर सूखता वैसे-वैसे शरीर में से तरल बाहर निकलता और एक डिब्बे में इकट्ठा होता था.

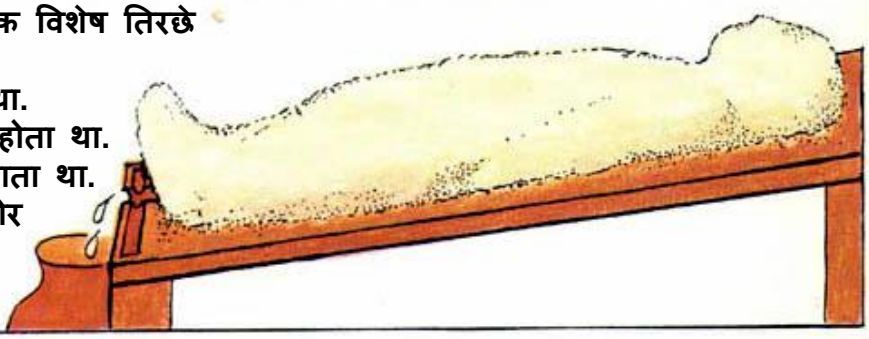

"कानोपिक जार" और सुरक्षक देवी-देवता.

हपी
फेफड़े

दुआमुतेफ़
पेट

इम्सेटी
जिगर

क़ेभसेनुएफ़
आंते

अन्दर के अंगों को शरीर से अलग करके "ममीफाए" किया जाता था.
हरेक अंग को एक कपड़े में लपेटकर उसे सुरक्षा करने वाले देवता के मुखोटे से ढंका जाता था.
उसके बाद हरेक "ममीफाइड" अंग को उसके विशेष "कानोपिक जार" में रखा जाता था.
बर्तन के ढक्कन पर भी देवता की मूर्ति होती थी.

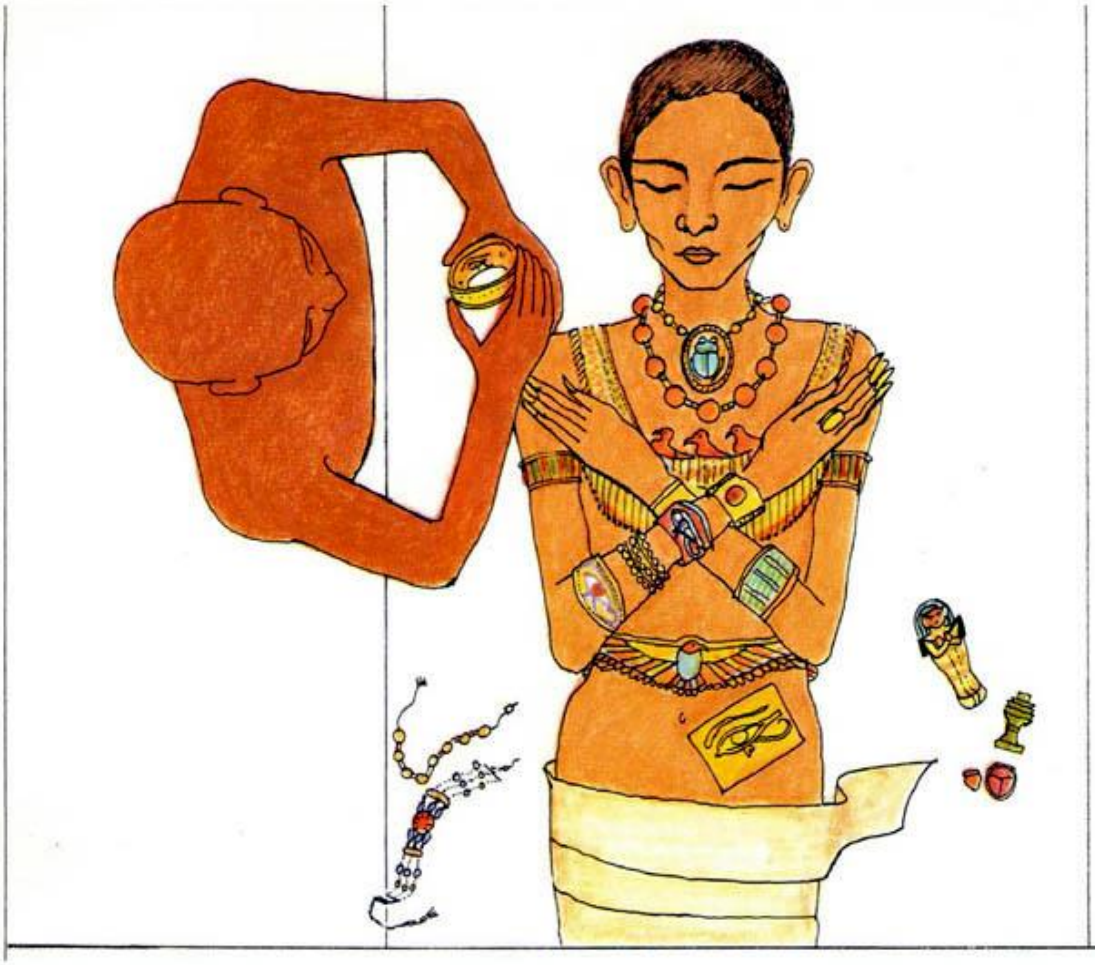

शरीर के कटे छेद को एक प्लेट से ढंका जाता था
जिस पर होरस की सुरक्षा आँख अंकित होती थी.

चालीस दिनों के बाद "नैटरोन" के बंडलों को शरीर से बाहर निकाला जाता था.

फिर सूखे, सिकुड़े शरीर को स्पंज से साफ़ कर उस पर तेल, मलहम, मसाले और राल (रेसिन) पोते जाते थे.

सिर और शरीर को दुबारा भरा जाता था – पर इस बार नई चीज़ों से.

आँख के गड्ढों को कपड़े से भरकर बंद कर दिया जाता था.

नाक के दोनों छेदों में मधुमक्खी का मोम भरा जाता था.

दोनों हाथों को क्रॉस करके नाखूनों पर सोने की टोपियाँ पहनाईं जाती थीं.

शरीर में जहाँ कट लगाया गया था उसे सिल दिया जाता था.

फिर "ममी" को महंगे सोने और रत्नों के गहने पहना का सजाया जाता था.

फिर शरीर पर कपड़े की सकरी और लम्बी पट्टियां लपेटी जाती थीं.

उँगलियों, हाथों और टांगों पर अलग से पट्टियां लपेटी जाती थीं.

इन पट्टियां की परतों के बीच में और आवरण रखे जाते थे. हर कुछ तहों के बाद में उन्हें राल के गोंद से चिपकाया जाता था.

पत्तियों की बीस तहों के बाद, "ममी" सामान्य आकार की हो जाती थी.

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान इस बात की काफी सम्भावना होती थी कि लाश का कोई टुकड़ा – एक कान, या कोई ऊँगली टूटकर गिर जाए.

टूटे हुए अंगों को, लेप के बाकी बचे सामन के साथ मटकों में संभाल कर इकट्ठा किया जाता और उन्हें फिर कब्र के पास दफना दिया जाता था.

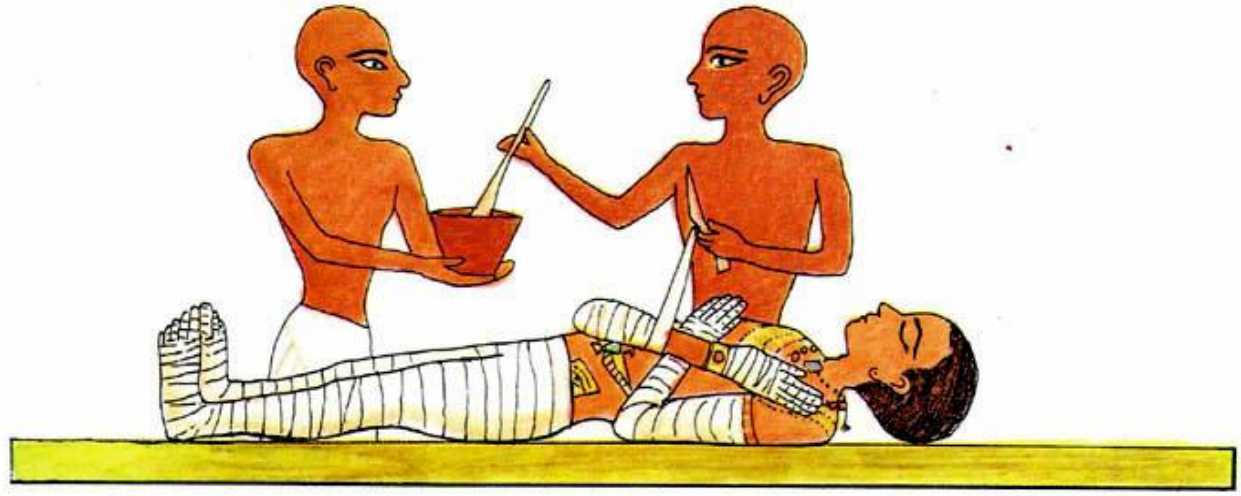

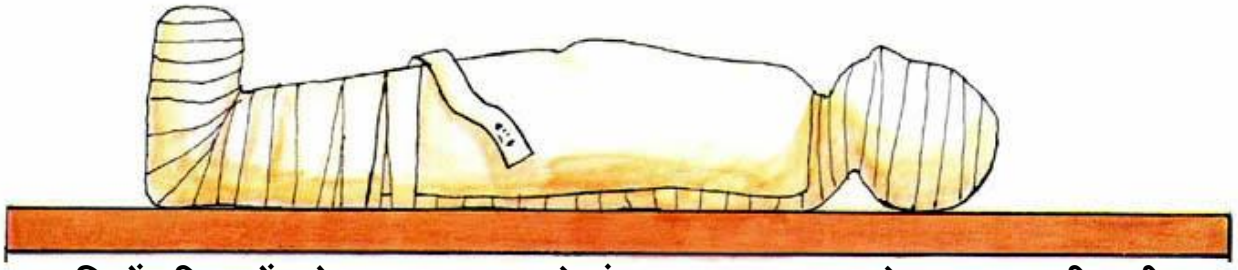

पट्टियों की तहों को एक आवरण से ढंका जाता था. उसके ऊपर दूसरी पट्टी बाँधने के बाद फिर आवरण लपेटा जाता था. इस प्रकार बीस परतें लपेटी जाती थीं. पट्टियों पर मृत व्यक्ति का नाम लिखा होता था.

एक शब्ती आकार

गुबरेला नई ज़िंदगी का संकेत

दजेद स्तम्भ ओसिरिस की रीढ़ की हड्डी

उद्जात होरस की सुरक्षा की आँख

वास राजदण्ड खुशहाली का प्रतीक

आइसिस की गाँठ प्रजनन शक्ति का प्रतीक

सीढ़ियाँ ओसिरिस के सिंहासन जाने का रास्ता

कमल पुनर्जन्म का प्रतीक

दो हाथ "का" का प्रतीक

सिरहाना "ममी" के आराम के लिए

आँख जीवन का प्रतीक

तख्ती "ममी" के उपयोग के लिए

शेन अनंत का प्रतीक

इस प्रकार के तमाम ताबीज़ "ममीज़" में पाए गए.
अक्सर सैकड़ों "शब्ती" भी "ममी" के साथ दफनाई जाती थीं.

जादुई ताबीजों को "ममीज़" की पट्टियों के बीच में छिपाया जाता था. छोटी "ममी" यानि शब्तियों में, खेती के औज़ार रखे जाते थे. शब्तियां, दूसरी दुनिया में "ममीज़" के लिए खेती का काम करती थीं.

फिर पट्टियों से लिपटे सिर को एक मुखोटे से ढंका जाता था.

जिससे, अगर इत्तिफाक से "ममी" को कुछ हो जाए तो भी "का" और "बा" उसे पहचान पाएं.

अंत में पूरे पैकेज को एक कफ़न में लपेटा जाता था और उसपर आखिरी रेसिन (राल) की परत लगाई जाती थी.

तब जाकर "ममी" पूरी तरह तैयार होती थी.

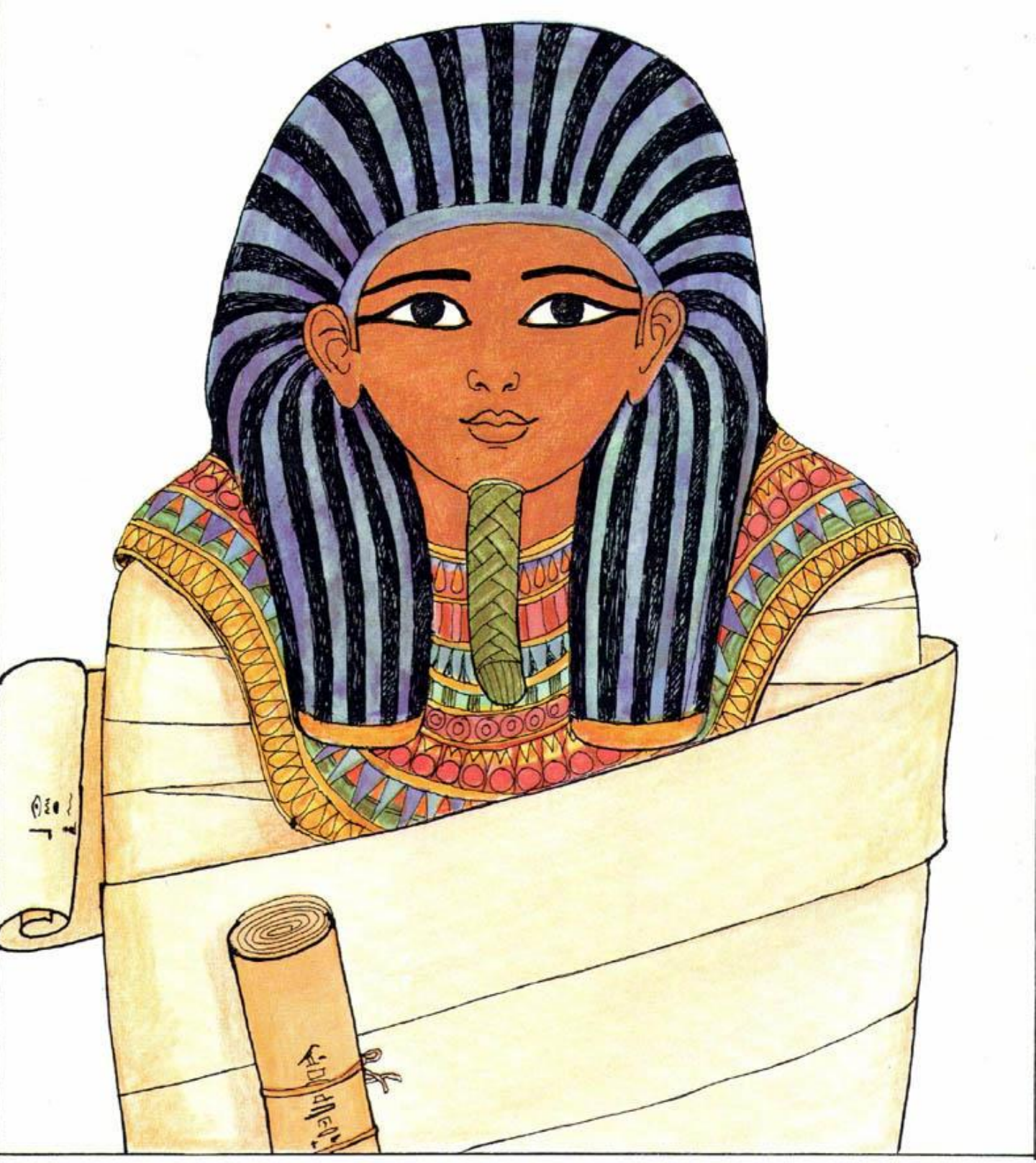

बहुत से मुखोटे "कार्टनऐज" से बनाये जाते थे – यह पदार्थ कपड़े और प्लास्टर से मिलकर बनता था. पहले उन मुखोटों को ढाला जाता था और फिर उन्हें रंगा जाता था. कभी-कभी मुखोटे सोने के बनाये जाते थे और उनमें महंगे रत्न मढ़े जाते थे. अक्सर उनमें ओरिसिस की दाढ़ी को गुंथी चोटी जैसे दिखाया जाता था.

मन्त्रों की एक किताब जिसका नाम था "मृतक की पुस्तक" को भी "ममी" के साथ में दफना दिया जाता था. यह मंत्र कागज़ सूचिपत्रों पर लिखे होते थे. ऐसा मानना था उनको रखने से मृतक को शाश्वत शान्ति मिलेगी.

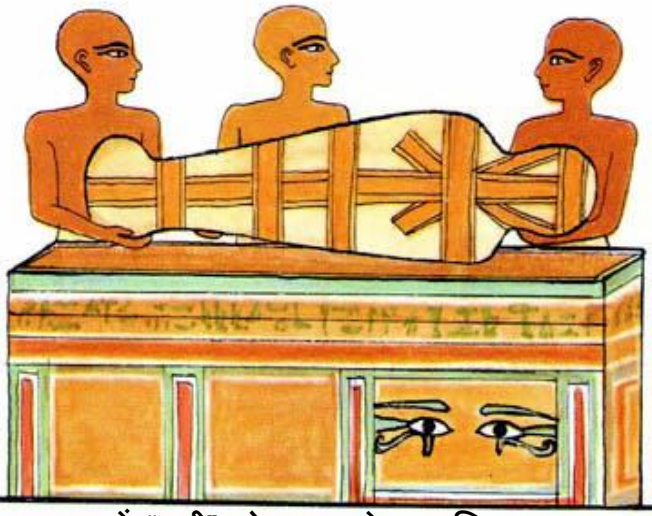

एक काल में "ममी" को करवट के बल लिटाकर दफ़न किया जाता था, जिससे वो ताबूत के बाहर पेंट की गई आँखों से देख सकें.

बाद में "ममीज़" को "ममी" के आकार वाले ताबूत में ही दफनाया जाने लगा. यह ताबूत लकड़ी और प्लास्टर के बने होते थे.

इस बीच कुशल चित्रकार, मूर्तिकार और बढ़ई दफ़नाने की पूरी तैयारी करते थे.

वे "ममी" के लिए ताबूत या फिर ताबूतों का एक घोंसला बनाते थे.

इन ताबूतों पर अन्दर-बाहर देवी-देवताओं के चित्र पेंट किये जाते थे जिससे कि वो "ममी" को सुरक्षा प्रदान करें.

यहाँ बढ़ई "ममी" के आकार का ताबूत तैयार कर रहे हैं.

तीन “ममियों” के ताबूतों का घोंसला

“ममी” को अन्दर वाले ताबूत में रखा जाता. फिर अन्दर वाले ताबूत को दूसरे ताबूत में रखा जाता, और फिर उसे एक बाहरी ताबूत से ढंका जाता. अंत में इन ताबूतों को एक पत्थर के ताबूत (सैकरोफैगस) में रखा जाता. ताबूतों पर जादुई मंत्र पेंट किये जाते थे. इन मन्त्रों को चित्रशैली में पेंट किया जाता था. प्राचीन मिस्त्र-वासी इस लिपि का उपयोग करते थे.

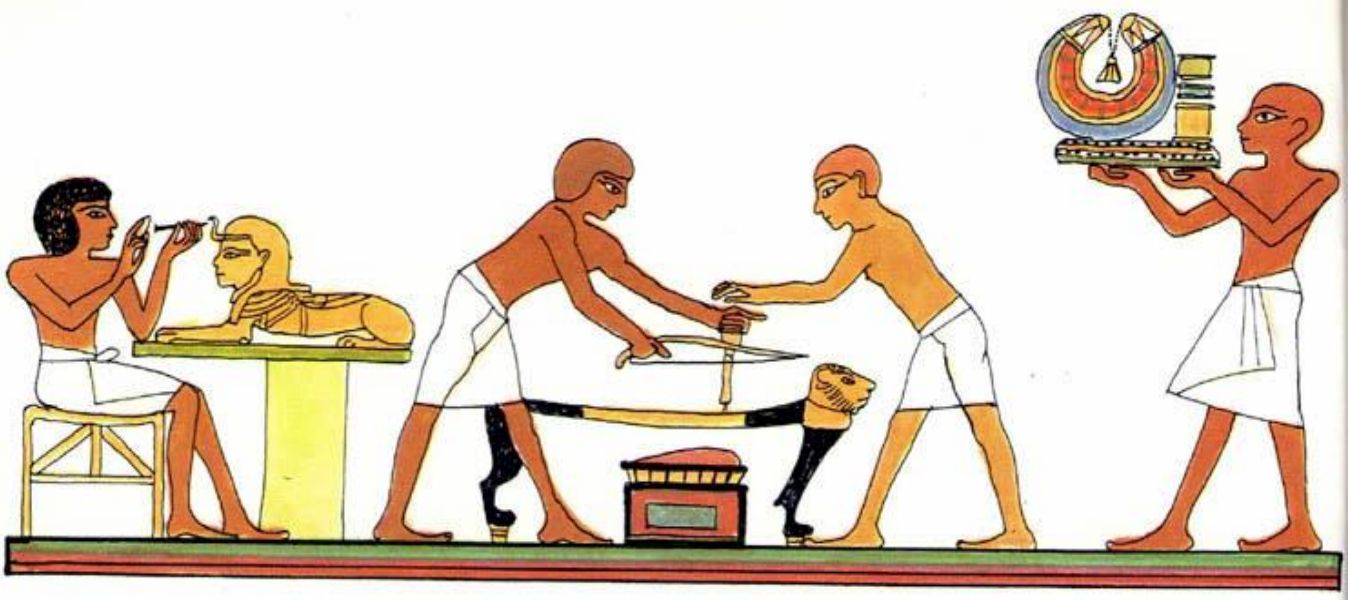

वे “ममी” के लिए आभूषण और फर्नीचर बनाते जिन्हें भी कब्र में दफनाया जाता था.

वे मृत व्यक्ति की मूर्ती को भी कब्र में रखते थे.

अगर “ममी” को कुछ हो गया तो यह चीज़ें “बा” और “का” के लिए आराम करने के स्थान बनेंगे.

अंत में ताबूत को पत्थर के एक सुन्दर सैकरोफैगस में रखा जाता था.

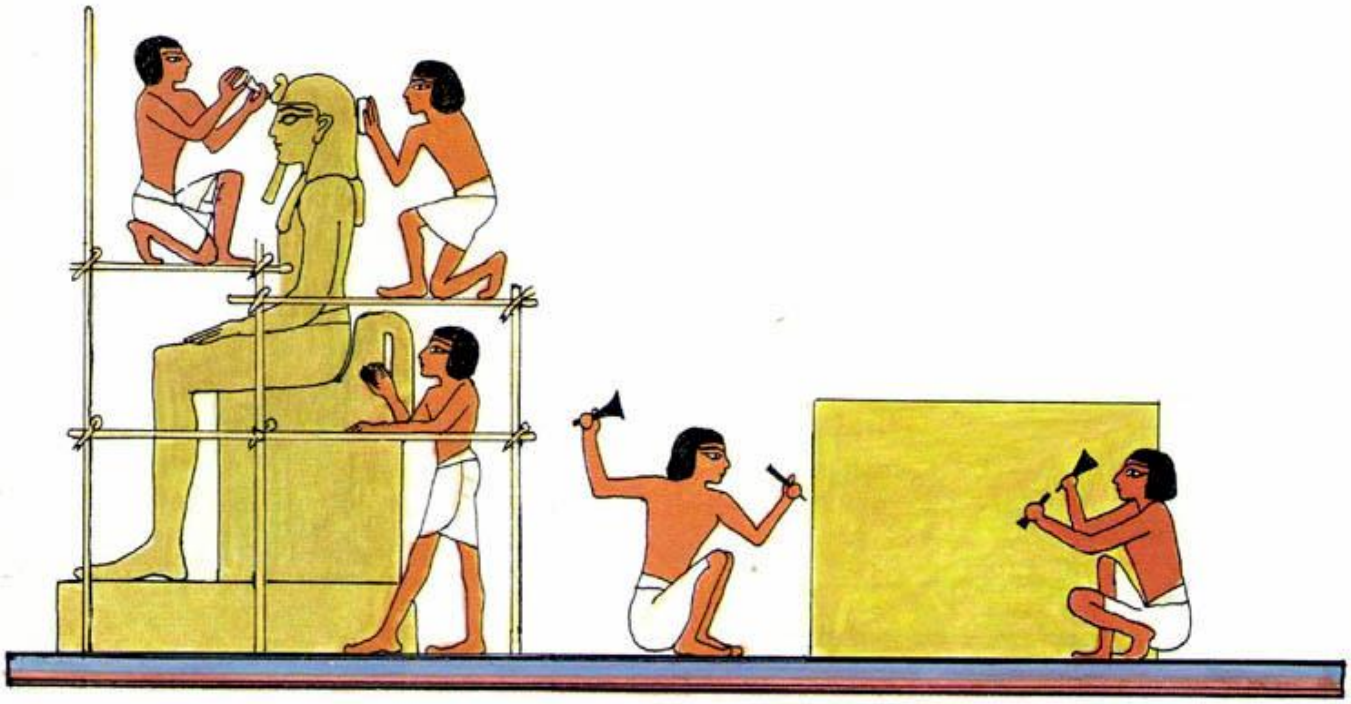

शाही मकबरों को, तराशी हुई मूर्तियों और चित्रों से सजाया जाता था. यह चित्र बेहद सुन्दर और देखने में एकदम जादुई लगते थे.

चित्र, मृत व्यक्ति की नई ज़िन्दगी प्रदर्शित करते थे.

वहां नर्तक और संगीतज्ञ उसका मनोरंजन करते थे.

नौकर-चाकर खेतों में काम करते थे और राजा के लिए भोजन पहुंचाते थे.

मृतकों के देवी-देवता उसके आगमन का स्वागत करते थे.

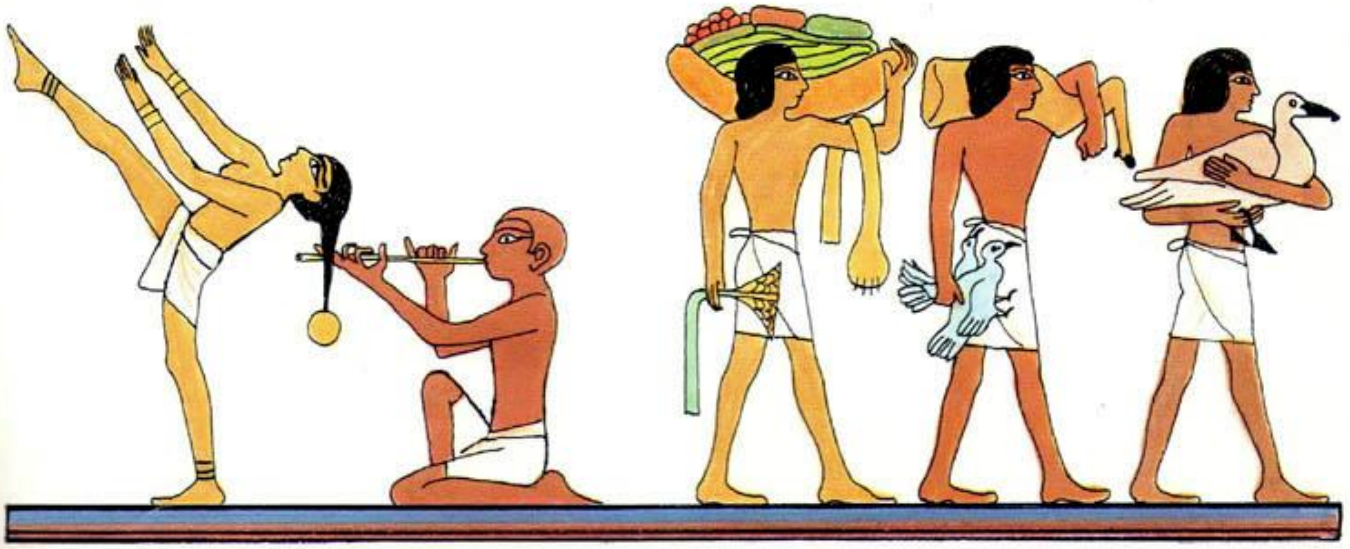

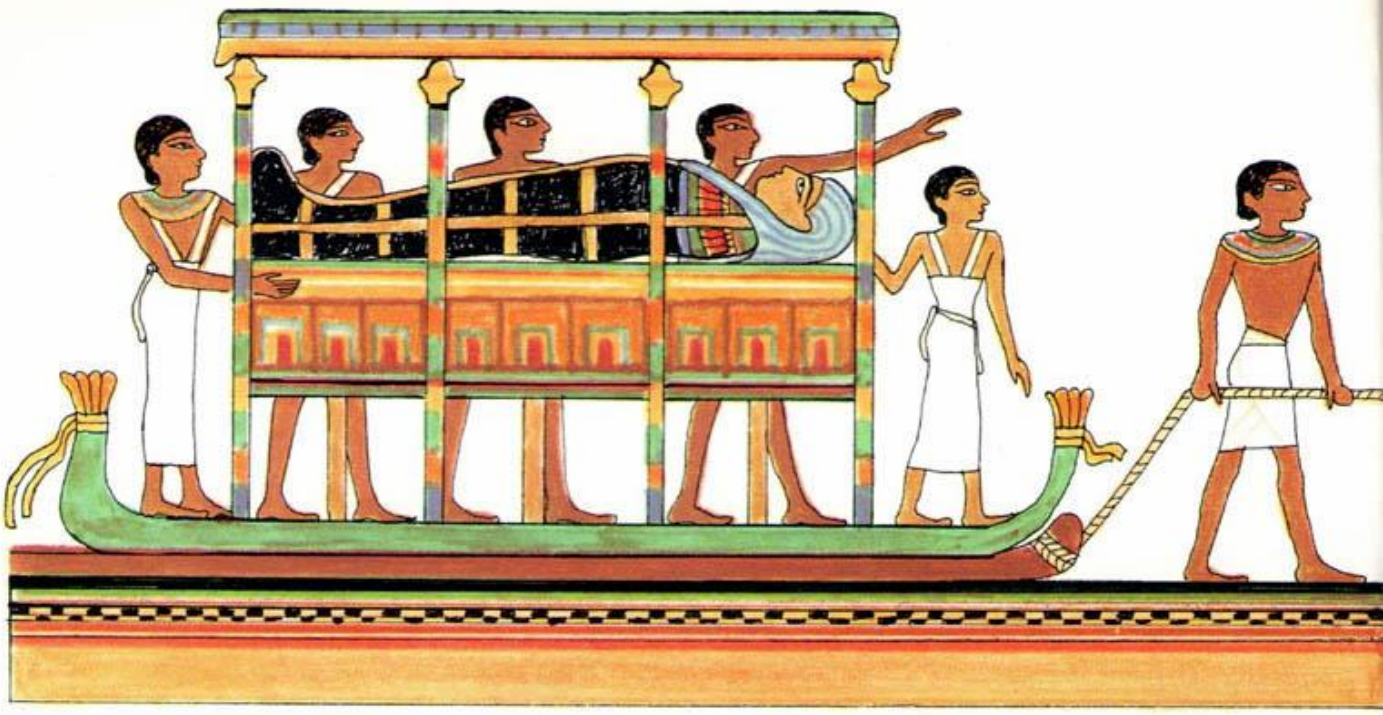

एक लम्बे और गंभीर जलूस में "ममी" को कब्र या मकबरे तक ले जाया जाता था.

"ममी" एक सजी-धजी गाड़ी पर लेटी होती थी जिसे बैल खींच रहे होते थे.

एक दूसरी गाड़ी "कानोपिक जार" ले जा रही होती थी.

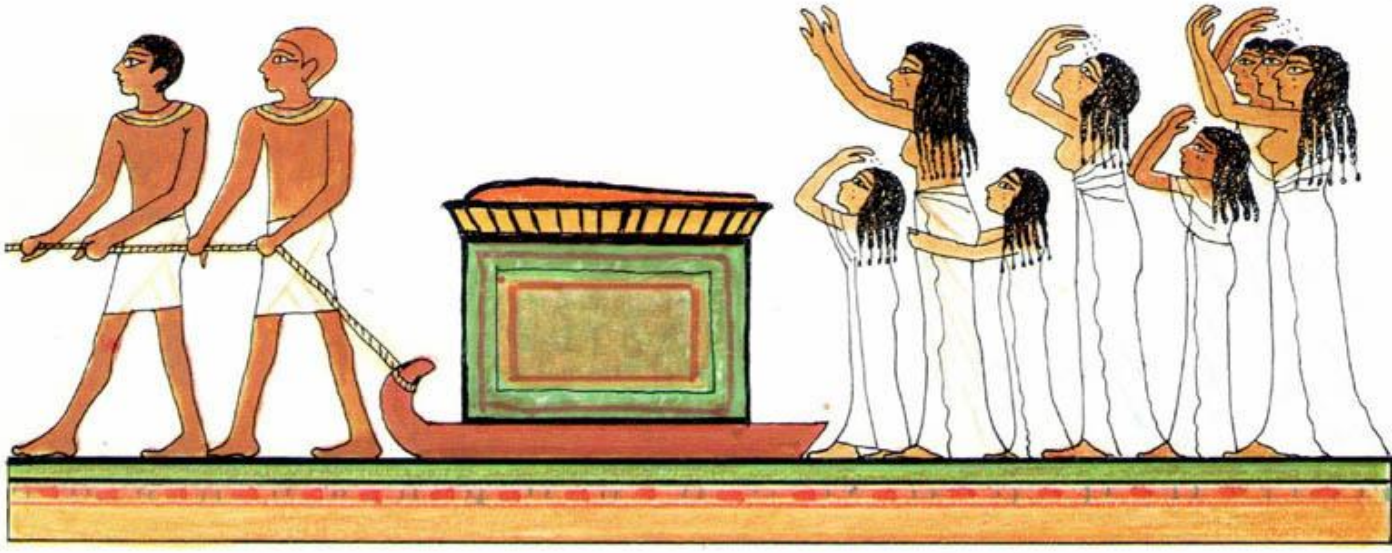

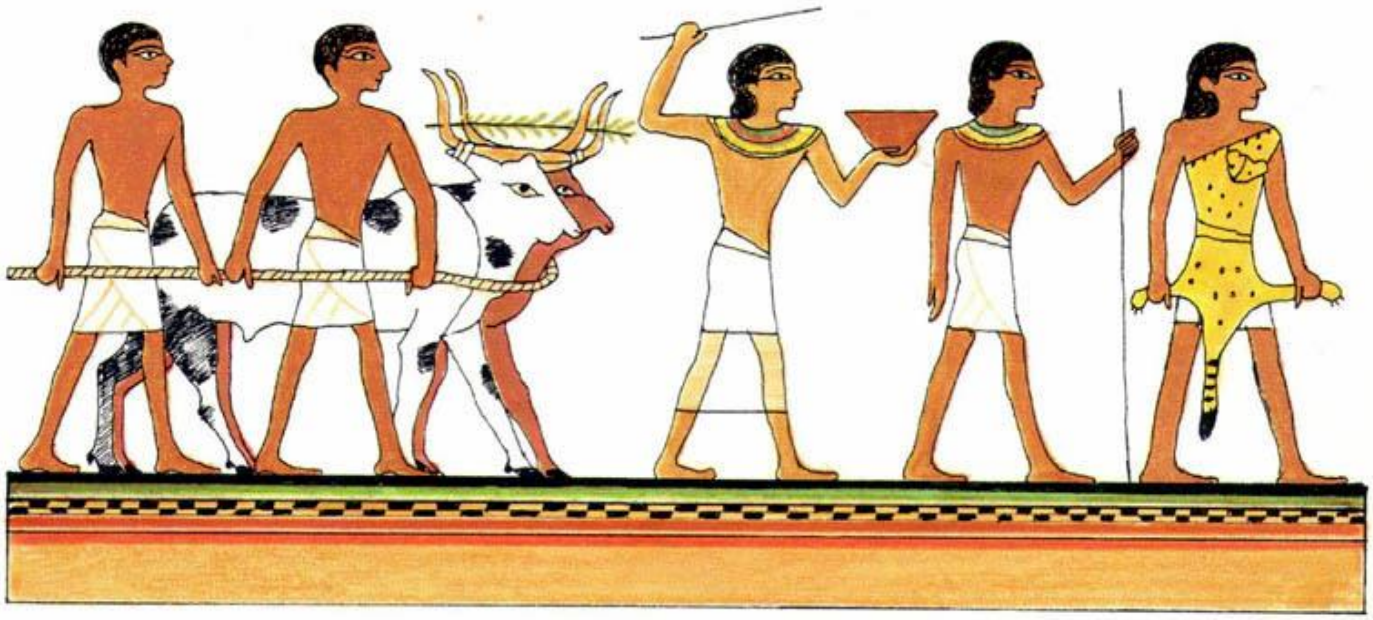

पुजारी, परिवार, नौकर और शोक करने वाले (जिन्हें रोने के लिए पैसे मिलते थे) इस जलूस के पीछे-पीछे चलते थे.

कुली उस तमाम सामान को लेकर चलते थे, जिसे "ममी" के साथ दफनाया जाना था.

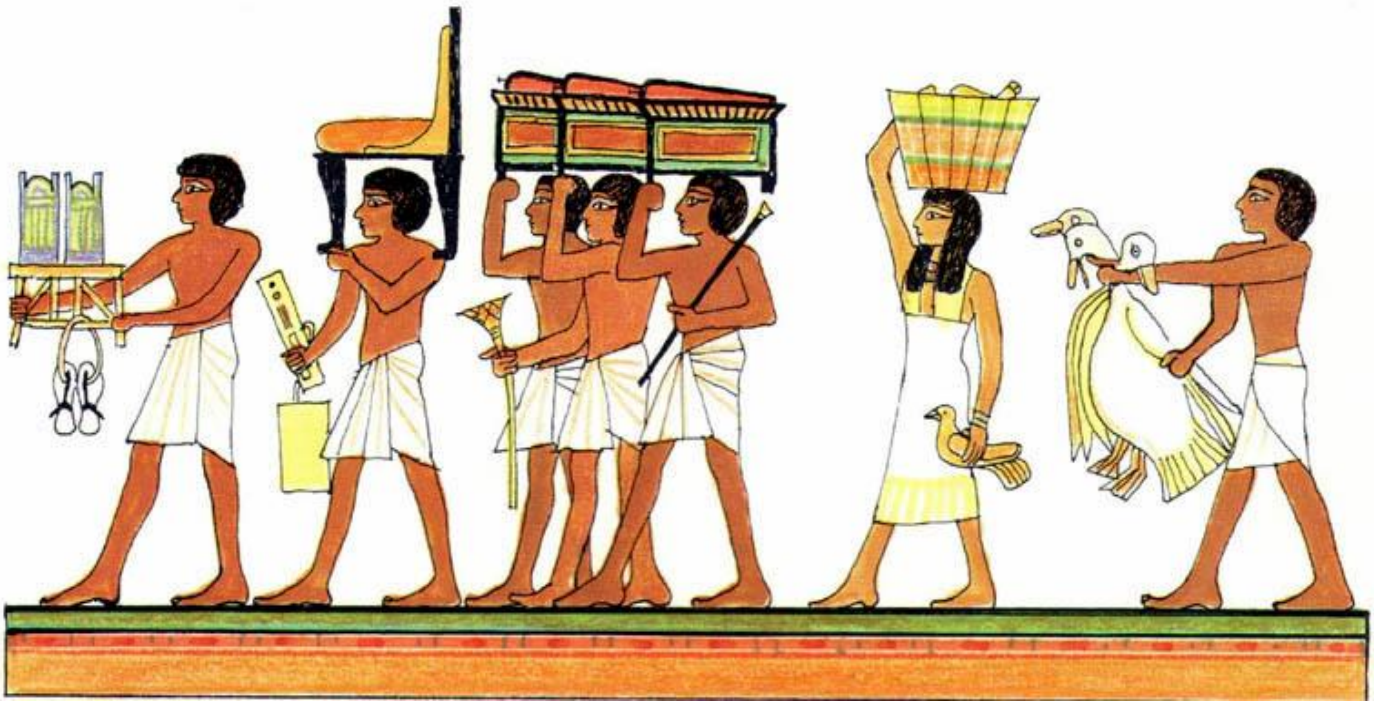

यह कब्र, अब महज़ एक गड्ढा नहीं थी.

वो "ममी" का घर था. "बा" और "का" हमेशा के लिए अमर होने के लिए ही बने थे.

शाही मकबरा एक सुरक्षा का किला भी था – जिससे कि चोर और डाकू "ममीज़" और उनकी दौलत को न लूटें.

मिस्त्र-वासियों के लिए घरों की तुलना में मकबरे ज्यादा महत्वपूर्ण थे.

लोग ज़िन्दा रहते हुए अपने लिए मकबरे बनवाते थे.

सदियों से मृतकों को मकबरों – या "मस्तब" में दफनाया जाता था.

मस्तब – ईंटों और पत्थर के बने होते थे.

शाही मस्तबों में कई भण्डारण-कक्ष या गोदाम होते थे – जिन्हें सुन्दर तरीके से तराशे पत्थरों और चित्रों से सजाया गया था.

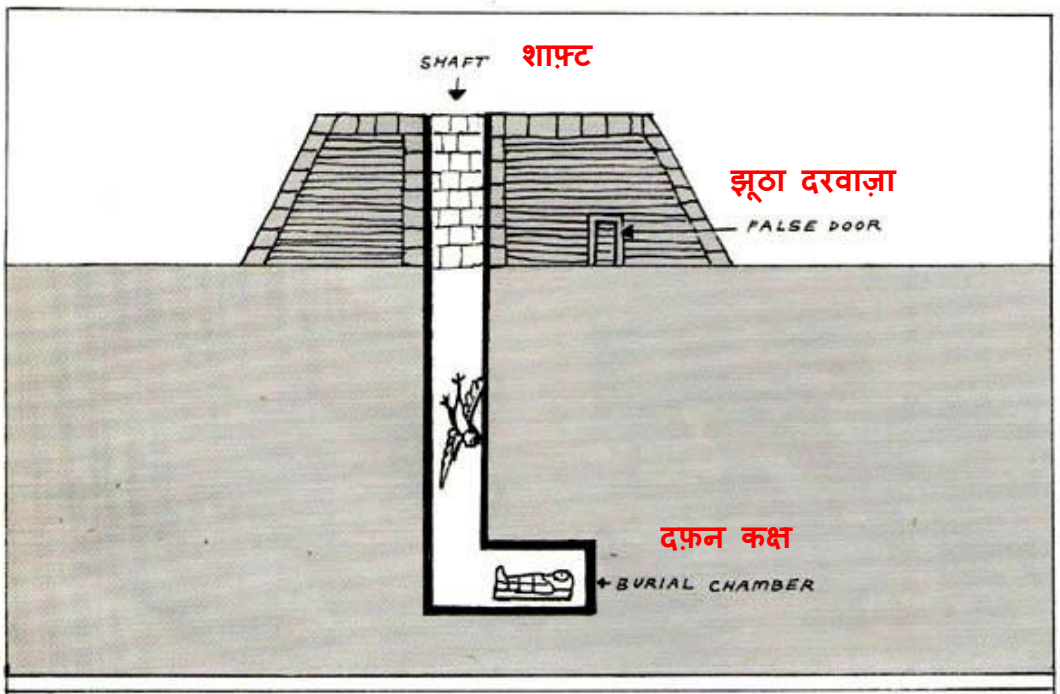

मस्तब

"ममी" को शाफ़्ट से दफ़न कक्ष में नीचे लाया जाता है. ऐसा माना जाता था कि "बा" शाफ़्ट का इस्तेमाल करके हर रात "ममी" के पास वापिस आता था.

हरेक मकबरे में एक झूठा दरवाज़ा होता है जिससे "का" आता-जाता था.

समय के बीतने के साथ फेयरो, अपने साथ, मस्तबों में बहुत ज्यादा धन-दौलत ले जाने लगे.

उस वज़ह से मकबरे बहुत बड़े, मज़बूत और सुसंपन्न (आलीशान) बनने लगे.

बहुत लम्बे समय तक फेयरो ने सिर्फ अपने लिए ही पिरामिड बनवाईं.

पिरामिड पत्थर के विशाल ढाँचे थे जिनको बनाने में सैकड़ों-हजारों मजदूरों ने अपनी पूरी जिंदगियां लगाते थे.

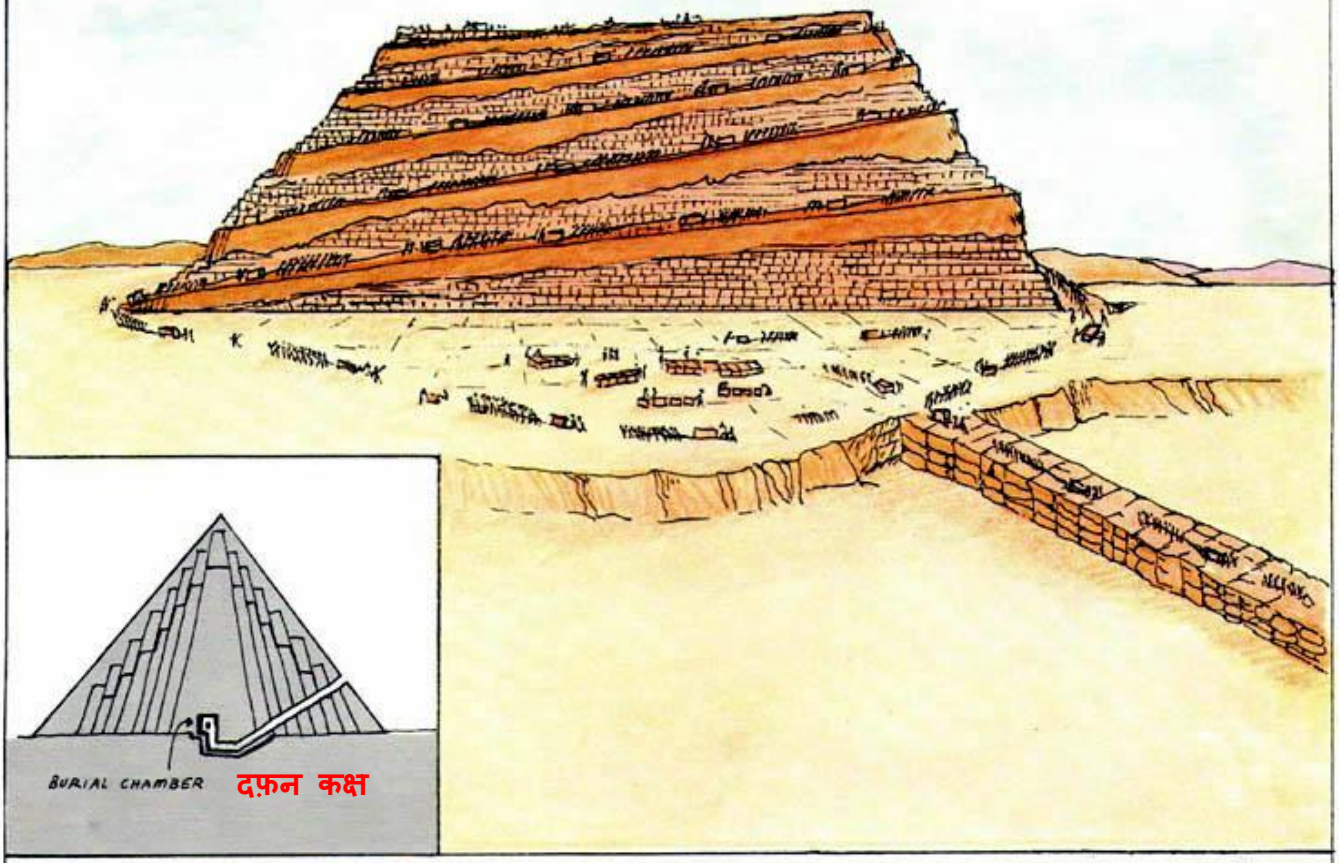

मजदूरों की टोलियाँ पत्थरों के बड़े विशालकाय ब्लॉक्स को काटकर उन्हें मिट्टी के ढलान पर चढ़ाकर ऊपर ले जाती थीं. यह काम वो पिरामिड के एक कोने से शुरू करते थे. जैसे-जैसे पिरामिड की ऊँचाई बढ़ती वो एक और "रैंप" या ढाल बनाते. मिस्त्र के महान पिरामिड को बनाने में 20-लाख पत्थर के ब्लॉक्स का इस्तेमाल हुआ.

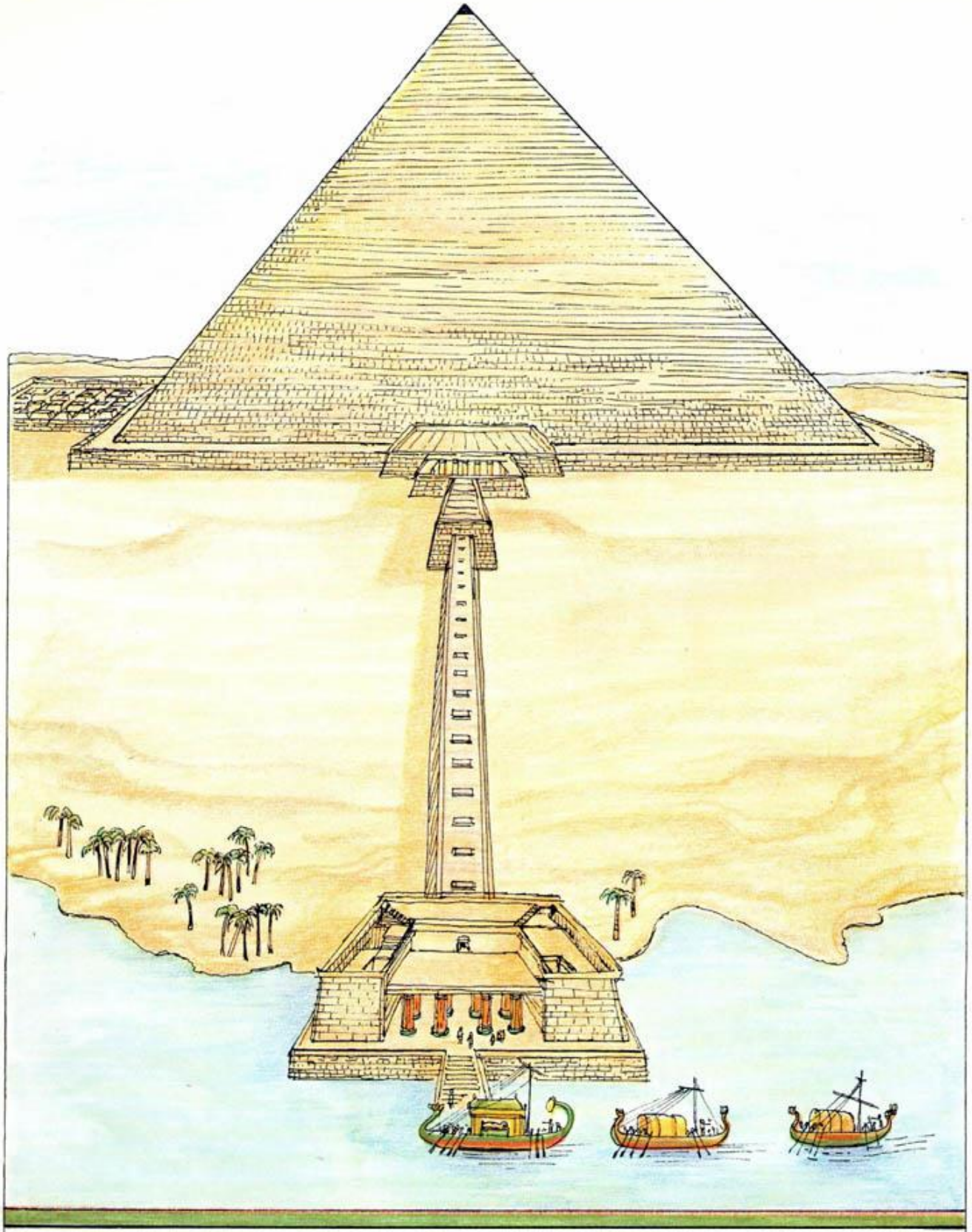

मकबरे और पिरामिड जैसे विशाल ढाँचे रेगिस्तान में वहीं बनाये जाते थे जहाँ सिर्फ रेत होती थी और जहाँ खेती करना बिल्कुल संभव नहीं था. कई बार शोकाकुल परिवार "ममी" को नील नदी तक नाव के ज़रिए लाते. फिर जिस नाव में "ममी" लाई गई थी उसे भी नई दुनिया में उपयोग के लिए मकबरे के पास ही दफना दिया जाता था.

पिरामिड, फेयरो के मकबरे को पूरी तरह से ढंकती हैं.

उनके पास में मंदिर, भण्डारण कक्ष (गोदाम) और मस्तब होते हैं और वहां शाही परिवार के सदस्य और उनके नौकरों को दफनाया जाता है.

बाद में फेयरो को गुप्त भूमिगत, वीरान इलाकों में बने मकबरों में दफनाया गया. उस वीरान इलाके को "राजाओं की घाटी" कहा गया. वहां पर गुफाएं, रास्ते, कमरे और मकबरों – सभी को पत्थर काट-काटकर बनाया गया. वहां ऊपर से कुछ और दिखाई नहीं देता.

अन्दर से पत्थरों को खूबसूरती से तराशा और पेंट किया गया.

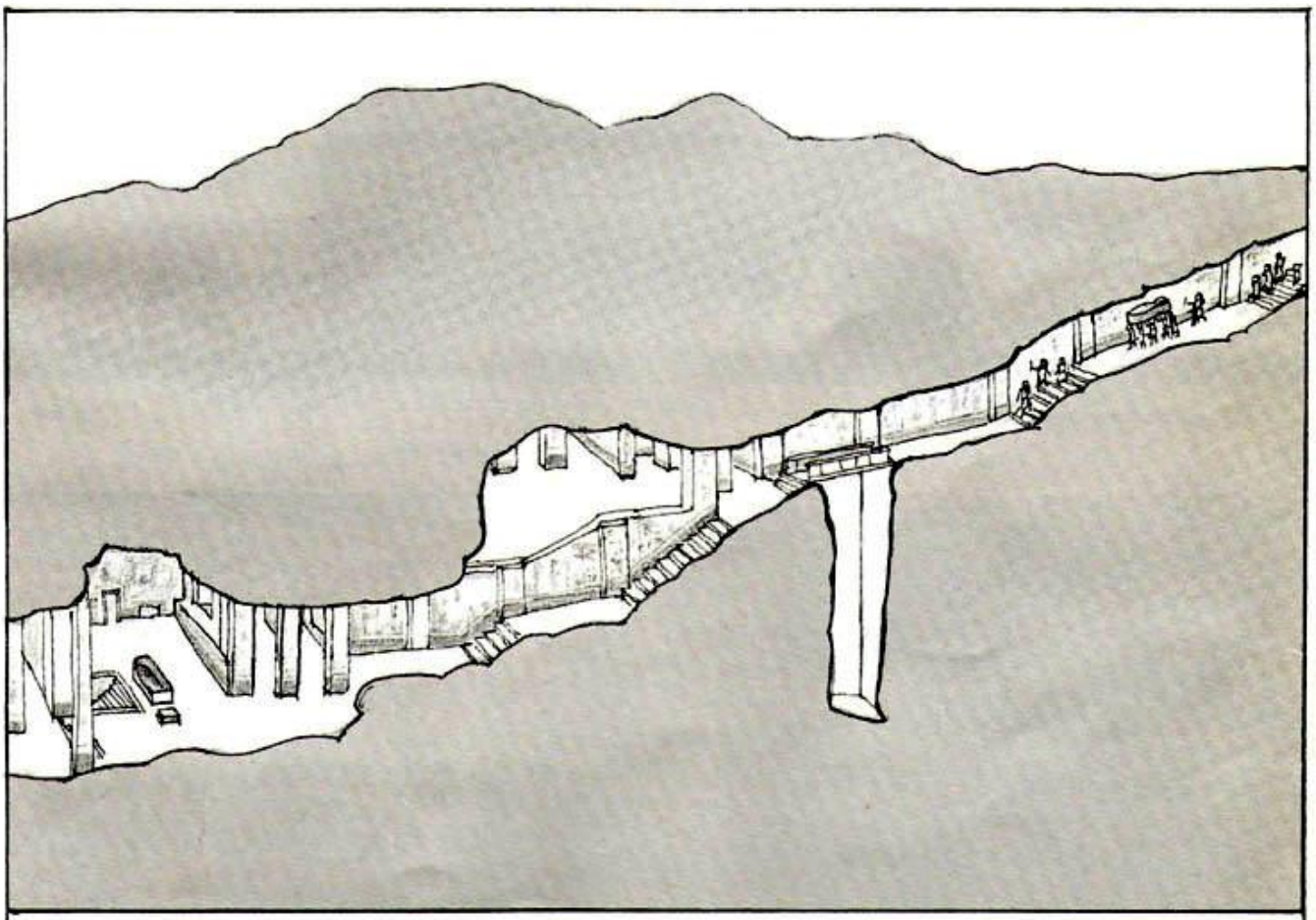

भूमिगत मकबरे का एक हिस्सा

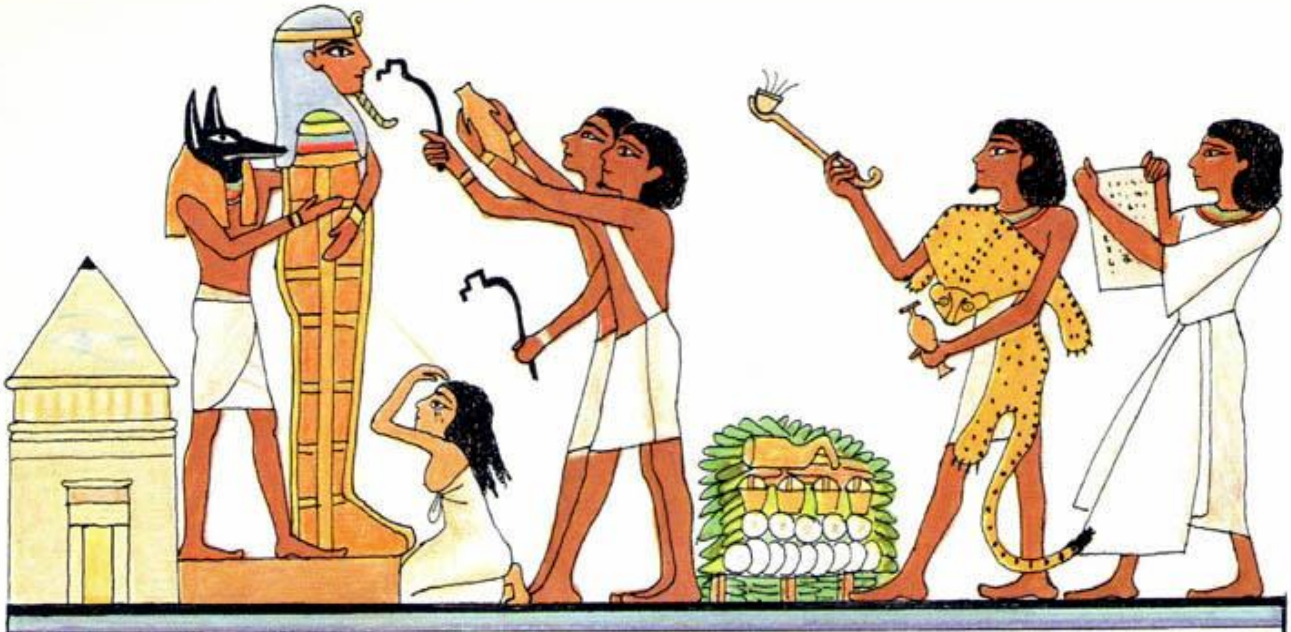

एक पुजारी ने अनूबिस देवता के कपड़े पहने हैं और उसने अनुष्ठान के लिए "ममी" को पकड़ा है.

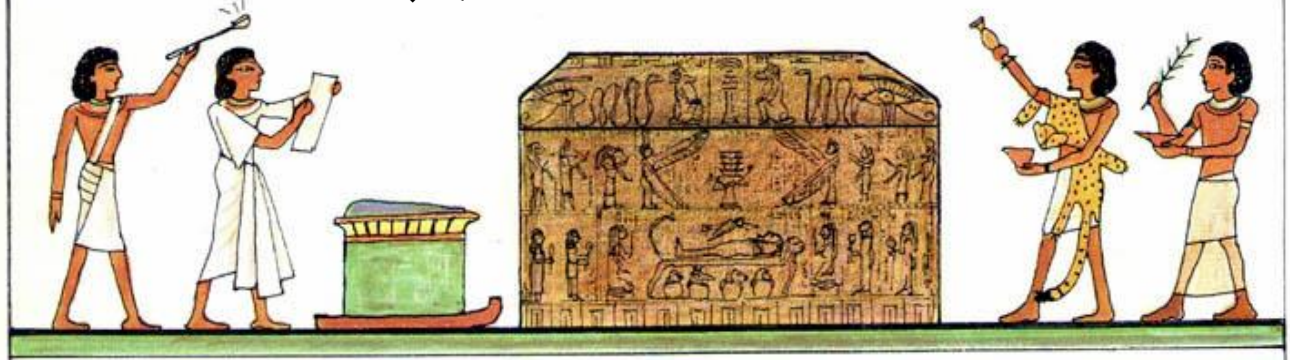

यहाँ सैकरोफैगस को सीलबंद किया गया है.

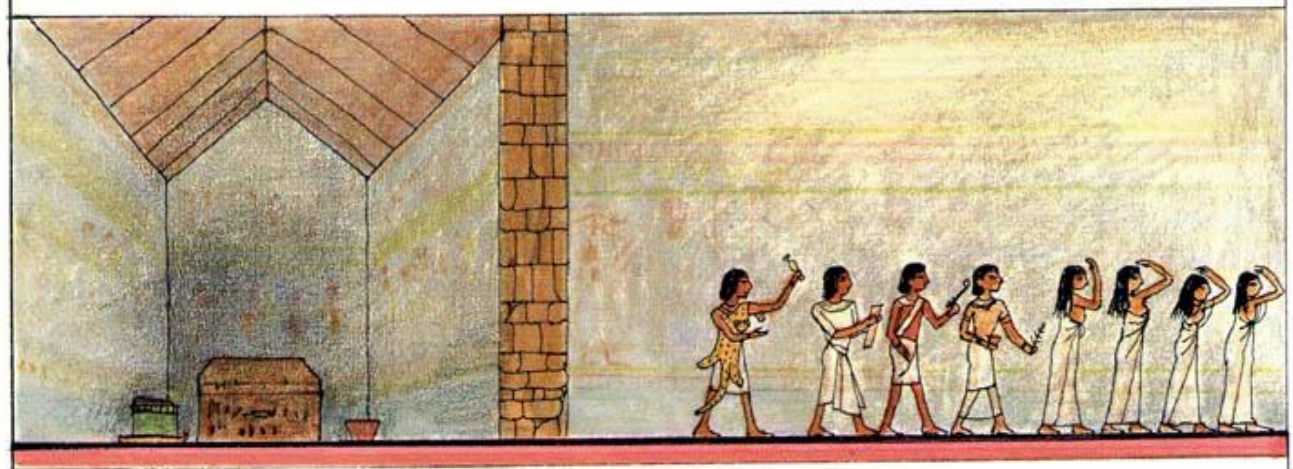

ज़नाज़े में मातम मनाने वाले लोग अब भोज के लिए जा रहे हैं. भोज के बाद जो खाना बचता, उसे भी मकबरे के पास दफना दिया जाता था. उसके बाद पुजारी और शोकाकुल परिवार, मंदिर में जाकर पूजा करके "ममी" के "का" के खाने के लिए प्रसाद लाते.

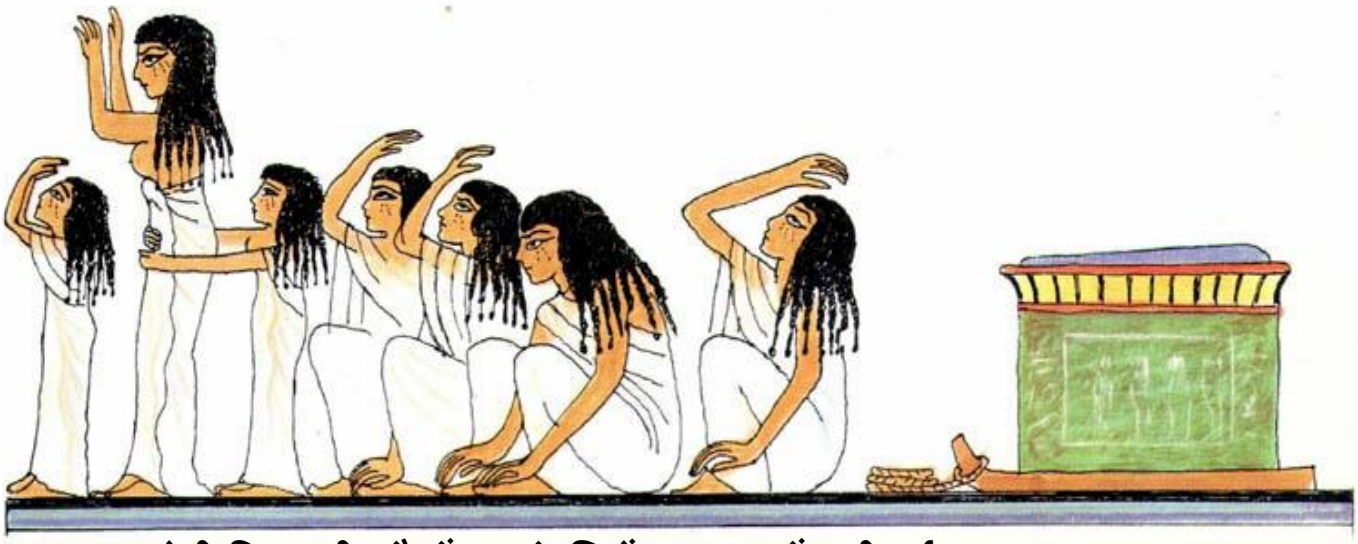

रोती-बिलखती औरतें अपने सिरों पर धूल फेंकती हुई

जब जनाज़े का जलूस मकबरे पर आता तो वहां पुजारी "ममी" पर एक अंतिम धार्मिक अनुष्ठान करता, जिसे "मुंह खोलना" कहते थे.

असल में "ममी" का मुंह नहीं खोला जाता था. पर इस पूजा से, "ममी" को मुंह खोलकर बोलने और खाने की जादुई ताकत मिलती थी.

उसके बाद "ममी" को पत्थर के सैकरोफैगस में रखकर, उसे ऊपर से एक भारी पत्थर के ढक्कन से ढँक दिया जाता था.

"कानोपिक जार" अपने सुरक्षा देवों के साथ पास में ही होते थे.

मातम मनाने वाले अब अपने-अपने घरों को वापस जाते थे. फिर मकबरे के दरवाज़े को बड़े पत्थरों की दीवार से बंद कर दिया जाता था.

अंततः "ममी" यहाँ पर शाश्वत काल के लिए आराम कर पायेगी और एक नए जीवन की शुरुआत करेगी.

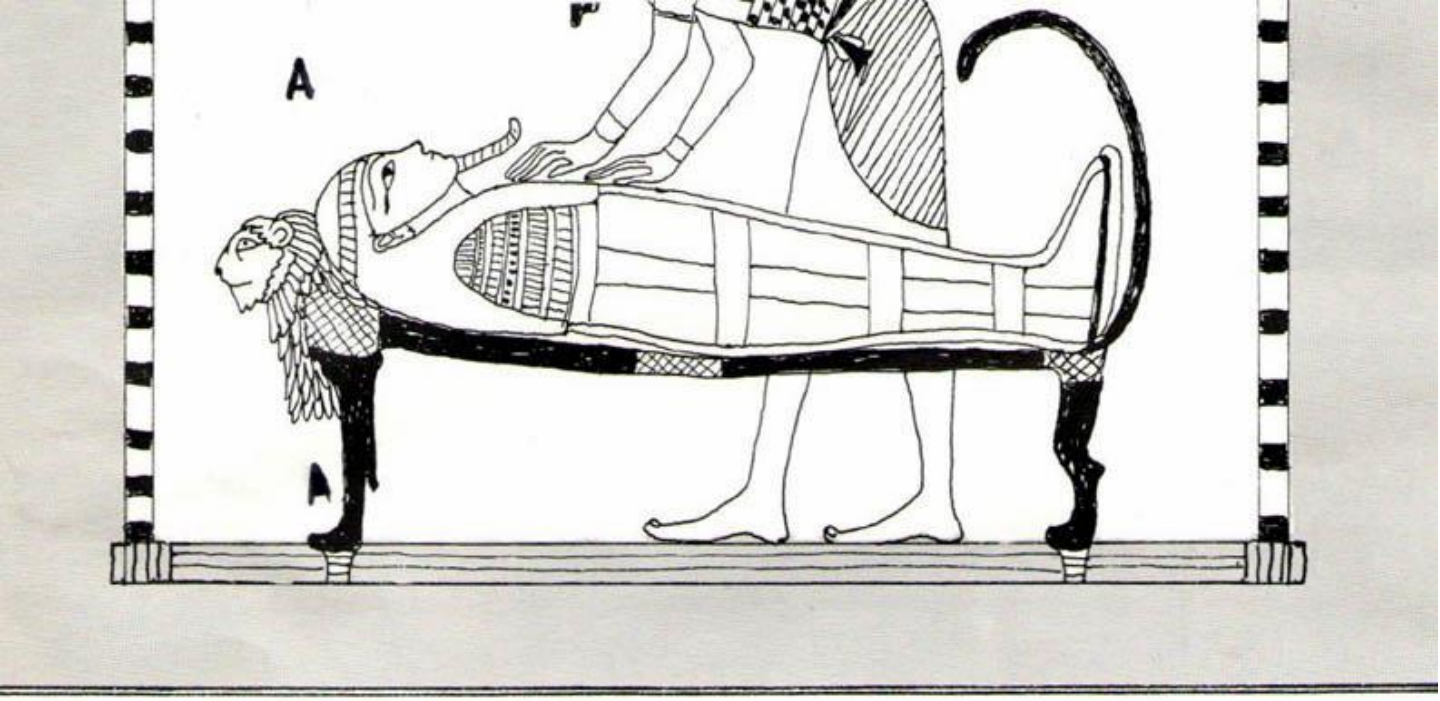

ऐसा मानना है कि “ममी” बनने वाले सबसे पहले व्यक्ति प्रसिद्द राजा ओसिरिस थे.

उन्हें सियार देव – अनूबिस ने अपने हाथों से लेप लगाया था.

देहांत के बाद ओसिरिस एक देव बन गए.

वो पाताल-लोक के राजा, और मृतकों के राजकुमार बन गए.

इसलिए मरने के बाद लोग ओसिरिस के राज्य में जाने को बहुत इच्छुक थे.

ममीज़ – मिस्त्र में बनीं

(8 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए)

“ममी” अभी भी एक रहस्य है – जो कपड़े की पट्टियों, और सोने के गहनों में ढंकी है.

प्राचीन मिस्त्र-वासियों ने अपने मृतकों को क्यूं “ममी” बनाया? क्यूंकि वो अमर होना चाहते थे.

“ममी” कैसे बनती हैं? “ममी” बनाने की प्रक्रिया में पूरे 70 दिन लगते हैं. फिर “ममी” को मकबरे में शाफ़्ट से नीचे दफ़न कक्ष में उतारा जाता है.

अंत में “ममी” को सीलबंद करके एक शाश्वत नया जीवन जीने के लिए हमेशा के लिए छोड़ दिया जाता है.